मिर्ज़ा शौक़ की मूल मस्नवी व उसका नाट्य रूपांतर

# ज़हर-ए-इश्क़

# भूमिका

मस्नवी 'ज़हर-ए-इश्क़' का कैफ़ी आज़मी साहब द्वारा तैयार किया गया ड्रामाई रूप हिन्दी में पहली बार प्रकाशित हो रहा है। इस रूपांतर के माध्यम से हिन्दी पाठक उनके व्यक्तित्व के एक नये आयाम से परिचित हो सकेंगे।

मस्नवी 'ज़हर-ए-इश्क़' नवाब मिर्ज़ा शौक़ लखनवी की तीन अमर मस्नवियो मे से एक है। प्रेम में विछोह का ऐसा मर्मांतक वर्णन विरल है। इस पारंपरिक विषय पर उर्दू में अनेक मस्नवियां लिखी गई हैं लेकिन ऐसी भाव प्रवणता और हृदयगाह्यता शायद ही कहीं और मौजूद हो। इसकी संवेदना में युवा हृदय की अभिलाषाओं का ज्वार है, अधूरे सपनों का विलाप है और प्रेम की लौ को आधियों के क़हर से बचा पाने की विकलता है। अपनी परिणति में यह एक दुःखात रचना है। प्रिय मिलन से वंचित नायिका की मृत्यु हमारे मन को झकझोर देती हे।

बाज़ आलोचकों की राय है कि यह मस्नवी नवाब मिर्ज़ा 'शौक़' की आपबीती है। इसके नायक वे खुद हैं। उन्होंने अपनी जवानी के असफल प्रेम पर तीन मस्नवियां लिखीं—फ़रेब-ए-इश्क़, बहार-ए-इश्क़ और ज़हर-ए-इश्क़। तीनों का कथ्य एक है। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो 'ज़हर-ए-इश्क़' में साहित्यिक उत्कर्ष कहीं ज़्यादा है।

उर्दू में मस्नवी विधा की समृद्ध परंपरा रही है। इसमें एक ही विषय या कहानी का निर्वाह किया जाता है। इसे प्रबंधकाव्य का ही एक रूप समझिए। 'शौक़' की मस्नवियों पर मीर दर्द के छोटे भाई ख़्वाजा मीर असर देहलवी और मोमिन की मस्नवियों का प्रभाव देखा जा सकता है। लेकिन 'शौक़' अपने विशिष्ट लखनवी रग और वर्ण्य विषय से अंतरंगता की बिना पर अपनी मस्नवियों को बेमिसाल बना गये हैं।

मिर्ज़ा 'शौक़', नवाब वाजिदअली शाह के ज़माने के मशहूर शाइर थे। मनस्वी 'ज़हर-ए-इश्क़' की रचना 1860ई. में हुई। इस मस्नवी का एक अन्य पाठ भी बनता है जिसमें हम उस समय के लखनऊ की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थिति से रू-ब-रू हो सकते हैं। 'शौक़' का उद्देश्य समाज सुधार नहीं था, न ही उनके रसिक स्वभाव से सुधारवाद का तालमेल बैठता था। शाइर अपने प्रेम

की व्यथा-कथा के निमित्त से भोग विलास में लिप्त एक पतनोन्मुख समाज के चित्र उभारता गया है। उस दौर मे लखनऊ के जीवन की यह विडम्बना थी कि मुर्गे, बटेरें आदि लड़ाने की कुरुचि नवाबो और अमीर-उमराव के प्रभाव से जन साधारण में भी पैदा हो गई थी। मुर्ग़े की जीत और हार जीवन-मरण का प्रश्न बन चुकी थी। मनस्वी मुर्ग़ों की लड़ाई से ही खुलती है। शुरू में लगता है कि जैसे हम कोई नाटक पढ़ रहे हों। नाट्य-तत्त्व के साथ-साथ यहाँ हास्य-विनोद का भी समावेश है। कहानी के बीच में लखनऊ के परिवेश की झलक भी जा ब जा मिलती है। 'शौक़' ने लखनऊ में नौचंदी के मेले, हज़रत अब्बास की दरगाह और हुसैनाबाद मे लोगों के जमघट को क़रीब से देखा था। ये तमाम चित्र मस्नवी के बीच-बीच मे आते हैं।

क़ाज़ी और नायिका महजबीं के तीखे संवादों के ज़रिए शाइर ने दो दृष्टिकोणो के द्वंद्व को बड़े कौशल के साथ मूर्त किया है। एक तरफ़ क़ाज़ी है जो यह ताकीद करता है, 'तुमको समझाऊं कैसे ऐ गुमराह/ अपने मज़हब में आशिक़ी है गुनाह'। दूसरी तरफ़ महजबीं है जो सूफ़ियों के इस क़ौल को अपना आदर्श समझती है, 'इश्क़ तो आप एक मज़हब है/सिर्फ़ मज़हब नहीं खुदा है इश्क़।' यहां शाइर बहुत गहरे में जड़ मूल्य-व्यवस्था से जूझता नज़र आता है।

कैफ़ी साहब ने इस मस्नवी में छुपे हुए नाटक को पाठकों के सामने उजागर कर दिया है। इस काम में एक बड़े कलाकार की सर्जनात्मक प्रतिभा झलकती है। रंगमंच की अपेक्षाओं के अनुरूप दृश्य विधानों और मंच निर्देशों की परिकल्पना की गई है। एक क्लासिक की नये ढंग से पुनर्प्रस्तुति एक कठिन उपक्रम है। इस नाट्य रूपांतर के ज़रिए पाठक मनस्वी 'ज़हर-ए-इश्क़' का ज़्यादा सहज रूप मे आस्वादन कर सकेंगे। निस्संदेह कैफ़ी साहब द्वारा दिये गये इस ड्रामाई रूप का रंगमंच की दुनिया में स्वागत होगा।

—जानकीप्रसाद शर्मा

## सौदागर का घर, दीवानख़ाना

*सौदागर दीवान पर बैठा है। उनका मुंशी दूकान का हिसाब लिये बैठा है। नवाब मिर्ज़ा की आवाज़ सौदागर के चेहरे पर पड़ती है।*

मर्द अशराफ़ साहिब-ए- दौलत
ताजिरों में कमाल ज़ी इज़्ज़त
ग़म न था कुछ फ़राग़ बाली से
था बहुत ख़ानदान-ए- आली से

**मुंशी** : जितने क़ालीन आये थे सरकार
देख लीजे हिसाब है तैयार
वहां के लोग बामुराद गये
सारे क़ालीन अज़ीमाबाद गये
आजकल जितने गाहक आते हैं
हाथ ख़ाली वो वापस जाते हैं

**सौदागर** : यूं किसी को कभी न टालिए आप
अब वो क़ालीन भी निकालिए आप
वही कश्मीर से जो आये हैं
वो जो हम अपने साथ लाये हैं
अब हिसाबो-किताब रहने दो
चांद भी देखना है उट्ठो चलो

**मुंशी** : इतने बादल फ़ज़ा में छाये हैं
नज़र आयेगा चांद कैसे हुज़ूर

**सौदागर :** नज़र आये नज़र न आये तो क्या
आज उनतीसवी है रोज़ों की
मैं समझता हूं चांद होगा ज़रूर

**सौदागर का घर, ज़नानख़ाना**

*सौदागर आंखें बंद किये क़दमों से ज़मीन टटोलता आ रहा है।*

**सौदागर बीवी :** खोलिए आंखें ये मज़ाक़ है क्या
कोई ठोकर लगी तो क्या होगा?

**सौदागर :** महजबीं किस तरफ़ है उसको बुलाओ
चांद देखा है उसकी शक्ल दिखाओ

**मां :** (आवाज़ देती है।) महजबीं!

**महजबीं :** (सीढ़ियों से उतरती हुई आवाज़ देती है।) अम्मां आती हूं।

**मां :** बेटी जल्दी आओ। अपने अब्बा को अपनी शक्ल दिखाओ।

***महजबीं*** *सजी-संवरी हुई सीढ़ियों से उतर रही है।*

**नवाब मिर्ज़ा :** एक दुख़्तर थी उसकी माहजबीं
शादी उसकी नहीं हुई थी कहीं
सानी रखती न थी वो सूरत में
इज़्ज़त-ए-हूर थी हक़ीक़त में
सब्ज़ नख़्ल-ए-गुल-ए-जवानी था
हुस्न-ए-यूसुफ़ फ़क़त कहानी था
उस सनो-साल पर कमाल ख़लीक़
चाल ढाल इंतिहा की निस्तालीक़
चश्मे बद्दूर वो हसीं आंखें
रश्के-चश्मे-ग़ज़ाल थीं आंखें
था जो मां-बाप को नज़र का डर
आंख भरके न देखते थे उधर
थी ज़माने में बेअदील-ओ-नज़ीर

ख़ुश-गुलू, ख़ुश-जमाल, ख़ुश तक़रीर
था न उस शहर में जवाब उसका
हुस्न लाखों में इंतिख़ाब उसका
शे'र गोई से ज़ौक़ रहता था
लिखने-पढ़ने से शौक़ रहता था
था ये उस गुल का जामाज़ेब बदन
सादी पौशाक पर ये सौ जोबन
नूर आंखों का दिल का चैन थी वो
राहते-जाने-वालिदेन थी वो

*बंगला, अंदरूनी हिस्सा*
*नवाब मिर्ज़ा और हादी मिर्ज़ा क़रीब-क़रीब खड़े हैं।*

**हादी :** आप कर लेते इससे गर शादी
दिल की होती न ऐसी बर्बादी

**नवाब मिर्ज़ा :** दो दिलों की वो सुनते क्या धड़कन
हो चुकी थी बुज़ुर्गों में अनबन

**हादी :** आपके वालिद और सौदागर
कभी आपस में मिलते थे

**नवाब मिर्ज़ा :** अक्सर।
ख़ूब मिलते थे कश लगाते थे
सैर करने को साथ जाते थे
एक कोठे पे मुजरा सुनते थे
एक गुलशन की कलियां चुनते थे
ऐसी मनहूस इक घड़ी आई
ख़ूब लोगों ने आग भड़काई
दोनों मुर्ग़ा लड़ाने बैठ गये
और मुसाहिब, ख़ुदा की उन पर मार
मुर्ग़ों का दिल बढ़ाने बैठ गये
याद अब तक है मुझको वो मंज़र
वहां बैठा हुआ था सौदागर

*सौदागर अपना मुर्ग़ा पाली में उतार कर बैठा है।*

यहां बैठे हुए थे अब्बा मियां।

**नवाब हैदर अली** *अपना मुर्ग़ा लिये हुए ज़मीन पर बैठे उसके नाख़ुनों को देख रहे हैं।*

मुर्ग़े कमबख़्त लड़ रहे थे वहां।

मुसाहिबों में इशारे बाज़ियां शुरू हो जाती हैं कि लड़ाई क्यों शुरू नहीं हो रही है? सौदागर का मुसाहिब कुहनी मार कर उकसाता है कि भाई क्यों इतनी देर? बिस्मिल्लाह।

**दूसरा मुसाहिब :** बिस्मिल्लाह!

**एक मुसाहिब :** बिस्मिल्लाह!

सब एक साथ उछल कर कहते हैं, 'बिस्मिल्लाह!'

**सौदागर :** भाई हैदर अली हकीम भी हैं

**दूसरा मुसाहिब :** इसको कुश्ता खिलाकर लाये हैं

**तीसरा मुसाहिब :** मादा को नर बना के लाये हैं

हैदर अली मुर्ग़ा पाली में उतारते हैं, "चल मेरे मस्त शेर बिस्मिल्लाह।"

**एक मुसाहिब :** आप आया नहीं है ये मुर्ग़ा
मौत लाई है घेर बिस्मिल्लाह
तेरे नाख़ुन जो नोके-नश्तर हैं
उसकी गर्दन पे फेर बिस्मिल्लाह

**सौदागर :** पिद्‌दी क्या तेरे आगे ठहरेगा
कर दे तू उसको ढेर बिस्मिल्लाह

तमाम मुसाहिब पूरे जोश में उछल-उछल कर कहते है, "बिस्मिल्लाह, बिस्मिल्लाह।" और उनके चेहरों से मालूम होता है कि मुर्ग़े बड़ी बेजिगरी से लड़ रहे हैं। हैदर अली का मुर्ग़ा लहू-लुहान होकर हवेली में भागता है। हैदर अली खिसियाने होकर उसके पीछे-पीछे जाते हैं।

सौदागर पुकार कर कहता है :

आपका कुश्ता हो गया बेकार
मुर्ग़ी मुर्ग़ा न बन सकी सरकार

**मुसाहिब :** हम ग़रीबों की कुछ दुआ लीजे
अब ये मुर्ग़ा हमें खिला दीजे

**सौदागर :** मैं भी इन सबके साथ आऊंगा
दोनों टांगों अकेले खाऊंगा

हैदर अली झल्लाते पांव पटकते हुए जब ज़नान ख़ाने मे आते हैं, तब सबसे पहले उनकी नज़र हवेली की शौख़ो-तर्रार नौकरानी मेंहदी पर पड़ती है।

**हैदर अली :** मेंहदी, बेगम नज़र नहीं आतीं
इस तरफ़ हैं ग़ुलाम गर्दिश में
वहां क्या करती हैं बुला जल्दी
आये हैं हम उन्हें बता जल्दी

*बेगम अपने तोते को मिर्च खिला रही हैं।*

रूठ के हम से तुम न भूके मरो
लो मियां मिट्ठू नोश जान करो

*बेगम मिर्च खिलाने में सर उठाती हैं तो सामने एक नौजवान लड़की सिर पर टोकरी लिये हुए चली आ रही है।*

**बेगम :** (पहचान लेती हैं।) : दिलरुबा!

**दिलरुबा :** तस्लीम!

**बेगम :** कैसे आना हुआ है कोई काम?

**दिलरुबा :** आग़ा साहब ने भेजे हैं ये आम

**बेगम :** (ताज्जुब से) आम क्यों?

**दिलरुबा :** पहली फ़सल आई है।
आपका हिस्सा बंदी लाई है।

**बेगम :** मेंहदी जल्दी ये आम ले और उसे उसकी टोकरी दे दे।

*मेंहदी दिलरुबा के सिर से टोकरी उतारकर आम किसी दूसरे बर्तन में रख देती है और ख़ाली टोकरी वापस कर देती है।*

*बेगम देखती हैं कि ख़ाली टोकरी दी है।*

तुझको आख़िर, हुआ है क्या मेंहदी

टोकरी खाली देती ह पगली
यूं तो रहती है बदहवास सदा
आज कुछ बदहवासी दूनी है
अरे पगली ये बद शगूनी है

**मेंहदी :** ग़लती तो हुई ये मुझसे ज़रूर
पर ये सब मैं भी जानती हूं हुज़ूर

*मेंहदी कुछ दूसरे फल उसकी ख़ाली टोकरी में रख देती है। फिर टोकरी उसके सिर पर रख देती है। दिलरुबा मटक-मटक कर जाने लगती है।*

*हवेली का नौकर सलाम उसे ललचाई नज़रों से देखता है, फिर पीछे हो लेता है और कहता है :*

दिलरुबा यूं नज़र चुरा के न जा
दिल पे बिजली मिरे गिरा के न जा
ज़रा ख़ुशबू सुंघा दे बालों की
दे दे ख़ैरात गोरे गालों की
दिल लिया है तो जां भी लेती जा
कुछ जवानी का सदक़ा देती जा
हाय ये कूल्हे और ये पतली कमर
लग न जाये तुझे किसी की नज़र
मेरी बाहों में आ किसी से न डर
कोई इस वक़्त आयेगा न इधर

*सलाम हाथ पकड़ लेता है तो वह हाथ झटक देती है।*

**दिलरुबा :** तुमसे सौ बार कह चुकी हूं सलाम
छेड़खानी न मेरे साथ करो
पहले अब्बा मियां से बात करो

**कट**

*हवेली का दीवानख़ाना*

*हैदर अली मुंह फुलाये दीवान पर बैठे हैं। सलाम हुक़्क़ा भर कर उनके सामने लाता है।*

**हैदर अली** : (बड़ा-सा कश लेकर)
वो जो आग़ा की नौकरानी है
उससे शादी की तूने ठानी है

**सलाम** : शादी पर मैं अभी न था तैयार
हुक्म मां का मैं किस तरह टालूं
सोचता हूं निकाह कर डालूं

**हैदर अली** : दिलरुबा के चचा ने घर आकर
बाप को तेरे गालियां दी थीं
तुझको वो बात याद है कि नहीं
झगड़े की रात याद है कि नहीं
क्या तू वो गालियां भुला देगा
अपने पुरखों का सर झुका देगा

**सलाम** : चार दिन की ये ज़िंदगी है हुज़ूर
नफ़रतें कम रहें तो अच्छा है
दुश्मनी जिन सरों में पलती है
वो सदा ख़म रहें तो अच्छा है

**हैदर अली** : कितना गुस्ताख़ हो गया है तू
मेरे मुंह पे ये जाहिलाना कलाम
आज घर से निकाल दूंगा तुझे
भीक मांगेगा तू शहर में सलाम

**सलाम** : मुझसे होती कभी न गुस्ताख़ी
आप दिल तोड़ते न गर सरकार
आपको अब ये कैसे समझाऊं
दिलरुबा से हैं मुझको कितना प्यार
उससे वादा किया है शादी का
उसको हरगिज़ न मैं दग़ा दूंगा
टो टके की ये नौकरी क्या है
प्यार में नौकरी लुटा दूंगा

*सलाम वहां से चला जाता है।*

*हैदर अली गुस्से में तिलमिलाकर हर चीज़ को*

*मारकर खुद हवेली के अंदर चले जाते हैं और हवेली के ज़नानख़ाने में इधर-उधर देख के उनकी सबसे पहले नज़र मेंहदी पर पड़ती है। मेंहदी बिना वजह खिलखिलाकर हंस रही है।*

**हैदर अली :** बेगम आई नहीं अभी मेंहदी?

**मेंहदी :** आती होंगी।

**हैदर अली :** (गरज कर) उन्हें बुला जल्दी।
कह दे सरकार घर में आते हैं
दाग़ लेकर जिगर में आते हैं
बेगम आते-आते उनकी गरज सुन लेती हैं।

**बेगम :** (सामने आकर) लहजे में बरहमी है क्यूं इतनी

**हैदर अली :** किससे तुम बातें कर रही थीं, अभी

**बेगम :** भाई आग़ा की नौकरानी थी

**हैदर अली :** वो तो बेहद ज़लील औरत है
कुछ लगाने-बुझाने आई थी
या मिरी चुग़ली खाने आई थी
मुजरा सुनने को मैं गया भी नहीं
गाने वाली को कुछ दिया भी नहीं

**बेगम :** उसने तो ऐसा कुछ कहा न सुना
कितने सच्चे थे, क़ौल है जिनका
चोर की दाढ़ी में सदा तिनका

*हैदर अली खिसियाये होकर बग़लें झांकने लगते हैं। इतने मे नवासा भागा हुआ आता है।*

**नवासा :** चलिए नाना, चलिए!

**हैदर अली :** कहां चलूं बेटा?

**नवासा :** देखिए चलके मर गया मुर्ग़ा

**बेगम :** तुम पे सदके उतर गया मुर्ग़ा

**हैदर अली :** उफ़ मैं ज़िंदा हूं मर गया मुर्ग़ा

**बेगम :** (हंसती हैं) तौबा यूं भी न कोई सठियाए

**हैदर अली :** तुम जो इस वक़्त भी करोगी मज़ाक़

आज दे दूगा मै ज़रूर तलाक़

**बेगम :** इतनी हिम्मत नहीं करूं जो सवाल

सदक़े किस बात पर है इतना मलाल

**हैदर अली :** (पूछते हैं) अपने मुर्ग़ का तुमने देखा हाल

**बेगम :** (कहती हैं) वो मुआं तो उधर पड़ा है निढाल

**हैदर अली :** वो जो आग़ा ने मुर्ग़ा पाला है

उसने इसको झंझोड़ डाला है

तेज़ नाखुन जिगर में गाढ़ दिया

इसका नाज़ुक पपोटा फाड़ दिया

मुंह भी गर्दन भी लाल है बेगम

**बेगम :** ऐ तो कह दो किसी से ज़िबह करे

क्यों बेचारा हराम मौत मरे

**हैदर अली :** जिबह करने का नाम लोगी अगर

फेर दूंगा छुरी मैं गर्दन पर

मुर्ग़ तुमसे भी मुझको प्यारा है

ज़िंदगी का मिरी सहारा है

*सेहन। सेहन में एक अलगनी है। उसी अलगनी पर मुर्ग़ी बैठी ऊंघ रही है। हैदर अली मुर्ग़ी को पकड़ लेते हैं और एक दर्दनाक लहजे में आवाज़ देते हैं—*

बेगम इसको पिन्हाओ रंडसाला

मर गया इसका चाहने वाला

पुरसा देना हमारा है शेवा

ये जवानी में हो गई बेवा

**बेगम :** ग़म अब इतना न जान पर लीजे

आप इससे निकाह कर लीजे

**हैदर अली :** देखो छिड़को नमक न ज़ख़्मों पर

डोली मंगवा दूं जाओ अपने घर

कहीं बेटे को तुमने भेजा है

कहां ग़ायब नवाब मिर्ज़ा है

**बेगम :** बाप से कुछ अलग है उसकी राह

अल्लाह रक्खे गया है वो दरगाह

*हवेली। ज़नानख़ाने में मुर्ग़ा पड़ा है। हैदर अली, उनकी बेगम दोनों उसी पोज़ीशन में खड़े हैं।*

**हैदर अली** : जाने दरगाह से कब आयेगा
इसका ताबूत कब उठायेगा
**बेगम** : तुम ज़्यादा न उसकी फ़िक्र करो
अभी फिंकवाए देती हूं इसको
**हैदर अली** : कितनी बेदर्द हो ख़ुदा की पनाह
तुम तो दानिस्ता कर रही हो गुनाह
समझो क्या रोके कहती है मुर्ग़ी
एक गबरू जवान था न रहा
किस क़दर मीठी बांग देता था
कितना शीरीं ज़बान था न रहा
उसके मरते ही हम हुए कमज़ोर
घर में एक पहलवान था न रहा
मुझमें अब कुछ नहीं रहा बेगम
वो मिरी आन बान था न रहा
हैं महल्ले में मुर्ग़ियां जितनी
सब पे वो मेहरबान था न रहा
**बेगम** : आदतें आप ही की थीं सारी
आपका तर्जुमान था न रहा
फांस लेता था सारी टीलों को
ऐसा जादू बयान था न रहा
**हैदर अली** : यूं तो नव्वाब मिर्ज़ा बाक़ी है
जो मिरे घर की शान था न रहा
*हवेली। हैदर अली मुर्ग़े के ग़म में उदास बैठे है।*
**बेगम** : मुर्ग़े का मातम आप कीजे ज़रूर
ये भी कुछ आपको ख़बर है हुज़ूर

बेटा दो दिन से घर नहीं आया
चांद अपना नज़र नहीं आया

**हैदर अली :** दूर घर से वो रह न पायेगा
क्यूं परीशां हो आ ही जायेगा
*हैदर अली बेगम को तसल्ली दे के सिर ऊपर उठाते है तो मेंहदी नज़र आती है। वह सेहन में झाड़ू दे रही है और हंसे जा रही है।*

**हैदर अली :** क्यूं हंसे जा रही है तू मेंहदी
ज़हर है ज़हर ये हंसी तेरी

**मेंहदी :** रात इक ख़्वाब ऐसा देखा है
जब से दिल खुश है नशा छाया है

**हैदर अली :** ख़्वाब क्या देखा ये हमें भी बता

**मेंहदी :** ख़्वाब देखा हैं आप जंगल में
और मिलती नहीं है कोई राह
शेर पीछे से आ गया नागाह
आप तनहा थे कोई साथ न था
उड़ के जाने कहां से आ पहुंचा
आपका रुस्तम आपका मुर्ग़ा
देख के उसको शेर भाग गया
अपना सोया नसीब जाग गया

**हैदर अली :** ज़ख़्म पर क्यूं नमक छिड़कती हो
मेरा मुर्ग़ा तो मुझको मार गया
आग़ा के मुर्ग़े से भी हार गया

**मेंहदी :** कैसे हारा है जानती हूं मैं
आप मानें न मानती हूं मैं
कल वो बाहर से घर में जब आया
मैंने पहले तो उसको दौड़ाया
बाजरा लेके अपने दामन में
पकड़ा जब उसको जाके आंगन में
(अपने नेफ़े से एक तावीज़ निकालकर)

था ये तावीज़ उसकी गदन मे

**हैदर अली :** (तावीज़ देखकर कहते हैं) मैं भी सोचूं कि किस तरह आख़िर, आग़ा साहब के बूढ़े खूंसट से, अपना गबरू जवान हार गया। ऐसा पहले कभी सुना तो न था, एक हाथी को पिद्दी मार गया। आग़ा के दोस्तों की चाल है ये। लाके तावीज़ दे दिया होगा।

**मेंहदी :** आग़ा ने खुद पहनाया होगा हुज़ूर। वही बंगाल जाते रहते हैं। कुछ पिछल पैरियाँ हैं क़ाबू में, उनसे तावीज़ लाते रहते हैं।

**हैदर अली :** आग़ा ऐसे हैं जानता मैं अगर
धब्बा लगता कभी न दामन पर
आग़ा से बाज़ी ऐसे हारता क्यूं
उसे पाली में ही उतारता क्यूं
अपनी बेगम किधर हैं उनको बुलाओ
और ये तावीज़ तो उन्हें भी दिखाओ
मेरा कहना कभी न मानेंगी
सच कहूंगा वो वहम जानेंगी

**मेंहदी :** अपनी बेगम तो हैं बहुत मासूम
आग़ा कैसे हैं उनको क्या मालूम

**कट**

*हवेली, ज़नानख़ाना। हैदर अली बेचैनी के साथ किसी का इंतिज़ार कर रहे हैं।*

**हैदर अली :** जाने बैठा कहीं है जाके दूर

**नूर :** (कहता है) मैं तो कब से यहां खड़ा हूं हुज़ूर

**हैदर अली :** और जो मैंने कहा था लाने को

**मेंहदी :** कीलें ले आया तख़्ता भी लाया

**हैदर अली :** तुम समझदार होते जाते हो
जिस तरक्क़ी की आरज़ू थी तुम्हें
उसके हक़दार होते जाते हो

**(बेगम से)** तुम ज़रा पर्दे में चली जाओ
इक ज़रूरत से आ रहा है नूर
वो जो दीवार में है इक खिड़की
बंद करना है उसको आज ज़रूर
चाहे शादी हो चाहे मातम हो
ईद का दिन हो या मुहर्रम हो
अब न आग़ा के घर कोई जाये
न वहां से यहां कोई आये

*हवेली, ज़नानख़ाना। नूर खिड़की के बराबर का एक मोटा-सा तख़्ता बनवा के लाया है। हैदर अली खिड़की में वह तख़्ता ठोंक रहे हैं और बड़बड़ाये जाते हैं। बड़बड़ा रहे हैं।*

जो उनके घर को रोशन करके मेरे घर में आती है
कोई कह दो कि इस घर में न ऐसी रोशनी आये
अगर सूरज को उनकी छत से होकर आना-जाना है
तो सूरज से कहो वो भी न इस छत पर कभी आये
हमारे सामने आग़ा हमेशा ऐसे आते हैं
कि जैसे दोस्ती का रूप भरके दुश्मनी आये
हुआ, तावीज़, टोना-टोटका मुर्ग़ों के दंगल में
कोई नादां भी सुन पाये तो उसको भी हंसी आये
हम अक्सर सोचते हैं सोच के शर्मिंदा होते हैं
महल्ला छोड़ के अपना यहां बेकार ही आये

*सौदागर दालान में एक दीवान पर गाव तकिए का सहारा लिये बैठा है। उसके हाथ में एक खुला हुआ ख़त है। जिसे वह बड़े ग़ौर से पढ़ रहा है। खट-खट की आवाज़ उसे परेशान कर रही है। वह बार-बार सिर-उठाकर इधर-उधर देखता है। फिर आवाज़ देता है, "सुनती हो!"*
*महजबीं के सिंगार का कमरा है। आवाज वही पहुंचती*

*है। महजबीं आईने के सामने बैठी है। मा*
*सवार रही है। बाहर से खटखट की आव*
*है। महजबीं उससे परेशान है।*
*मां चोटी गूंथ कर पीठ पर डाल देती है*
*फूल-सा चेहरा चूम लेती है।*

**मां** : चांद को मेरे लग न जाये नज़र

**महजबीं** : उफ़ फटा जा रहा है मेरा सर
कौन क्या कर रहा है रोके उसे

**मां** : तू परीशां न हो ख़ुदा के लिए
वो जो दीवार में थी इक खिड़की
बंद हैदर अली ने वो कर दी

**महजबीं** : है सताने का ये नया अंदाज़

**मां** : (सहम कर) आज तूने ये कैसी बात कही
ख़ौफ़ से मां की जान सूख गई
तुझपे क़ुर्बान मैं उतर जाऊं
ले के तेरी बलाएं मर जाऊं

**महजबीं** : खिड़की क्यू बंद होती है समझाओ
वजह कोई तो होगी है तो बताओ

**मां** : आग लोगों की है लगाई हुई
रात मुर्ग़ों की जब लड़ाई हुई
सोचो इक हादसा जहां में हुआ
भाई हैदर का मुर्ग़ा हार गया
हो गई ख़त्म दोस्ती.

**महजबीं** : लानत!

**कट**

*सौदागर के घर की दालान।*

**सौदागर** : "सुनती हो?" उसका कोई जवाब न पाक
पढ़ने लगता है।

*सौदागर की बीवी बेटी के कमरे से इस शान के साथ निकलती है कि एक नौकरानी हाथ में उगालदान, दूसरे हाथ में चांदी का ख़ासदान लिये चली आ रही है। बेगम का मुंह ज़रा खाली होता है तो वह ख़ासदान बढ़ा देती है और जब पान थूकना चाहती है तो नौकरानी उगालदान बढ़ा देती है।*

**बेगम :** मुझसे कुछ कहा तुमने?

**सौदागर :** (तंज़ से) शुक्र है जल्दी सुन लिया तुमने

**बीवी :** (चौंक के) ऐ तो कोई मैं बैठी थी बेकार
एक जान और घर के काम हज़ार
कभी मामा लहू जलाती है
कभी मुग़लानी जान खाती है
साफ़ तो क्या करेगी वो आंगन
मुफ़्त में धूल उड़ाती है भंगन
भिश्ती दो रोज़ से नहीं आया
आज मस्जिद से पानी मंगवाया
धोबी जब कपड़े लेके आता है
एक-दो कम ज़रूर लाता है

(नोकरानी) देख आई है जाके शबरातन
मेरे कपड़े पहनती है धोबन
कल्लू कमबख़्त खेलता है जुआ
इसलिए चोर हो गया है मुआ
हाल बावर्ची का है ये सरकार
मैं जो हरदम रहूं जो सर पे सवार
खीर में झौंक दे नमक मुरदार
दौड़ी-दौड़ी अगर चली आती
जल के बिरयानी राख हो जाती
आप क्या खाते और मैं क्या खाती
सुबह से इतना दिन चढ़ आया मगर
फिरकी-सी फिरती हूं इधर से उधर

पीठ दम भर लगाइ हो तो कहो
यहा रहना है अब मेरा दूभर
डोली मंगवा दो जाऊं अपने घर
आपके टुकड़ों की नहीं मुहताज
जाके मैके में मैं करूंगी राज

**सौदागर :** जोश ठंडा हो गर लड़ाई का
पढ़ दूं ये ख़त तुम्हारे भाई का

**बीवी :** लिखा होगा कि जल्दी घर आओ
अब न आओ तो ईद पर आओ
तुम अगर ईद पर न आओगी
ईद के दिन हमें रुलाओगी
लिखा है मेरा लाड़ला बेटा
तुमने छोटा-सा जिसको देखा था
देखो अब आके उसकी शान कभी
देखा ऐसा नहीं जवान कभी
पांच सौ बैठकें निकालता है
पहलवानों को पीस डालता है
उसने इक रेल को कल ज़ेर किया
दूध दो भैंसों का अकेले पिया
महजबीं का सुना है जब से नाम
मुझसे कहता है लिख दो मेरा सलाम
मैं सताने को उसके कहता हूं
खुद लिखो, मैं सलाम क्यूं लिक्खूं?
लिखना-पढ़ना उसे नहीं आता
इसलिए वो बहुत है शरमाता
महजबीं भी सयानी होगी अब
हाथ पीले करोगी, उसके कब?
जब जवां बेटी घर में रहती है
सोचो क्या-क्या ये दुनिया कहती है
चाह सकता है कैसे ये भाई

कि बहन की हो कब ये रुस्वाई
कहता है जो ज़माना सुनता हूं
महजबीं का फ़साना सुनता हूं
चुप कहां तक रहेगी ये दुनिया
उलटी-सीधी कहेगी ये दुनिया
एक-दो हों तो उनसे झगडूं मैं
किसकी-किसकी ज़बान पकड़ूं मैं
कोई कहता था तुम परीशां हो
क्यूं परीशां हो कितनी नादां हो
ग़म नहीं कुछ जो चंद लोगों ने
मांग के रिश्ता कर दिया इनकार
जब कहो तुम निकाह हो जाये
मेरा बेटा है शादी पर तैयार
महजबीं को वो चाहता भी है
जो कहे वो नया-नया भी है
लिख दो सठिया गये हो तुम भाई
ऐसा ख़त लिखते क्यूं न शर्म आई
और लिखता जो कोई ये बातें
मैं सुनाती हज़ार सलवातें[1]!
काला कौवा भी कोई लाये अगर
सदक़े करती नहीं मैं बेटी पर
उनका बेटा है कौवे से काला
और ख़त हमको ऐसा लिख डाला
लिख दो उनको कि अपने बेटे की
गाय-भैंसों से कर दे वो शादी
भाई ऐसे हैं भाभी के बस में
रह पड़े जाके वो बनारस में
उनसे भाभी ने ये कहा होगा
ऐसा ख़त हमको तब लिखा होगा

1 गालियां

लिख दो भाई तुम्हारे बेटा जिये
जितनी भैंसों का चाहे दूध पिये
महजबीं का मगर न लेना नाम
ऐसे रिश्ते को दूर ही से सलाम

**सौदागर :** अब तक आया जहां-जहां से पयाम
कर लिया तुमने दूर ही से सलाम
रस्मे-दुनिया निभाओगी कि नहीं
कहीं बेटी को ब्याहोगी कि नहीं
हुस्न क्या चीज़ है जवानी क्या
इस पर इस दर्जा लंतरानी क्या
फूल पल भर ही मुस्कुराते हैं
चांद गहना के डूब जाते हैं
घमंड अच्छा नहीं खुदा से डरो
दिल दुखे जिससे वो न बात करो
तुम्हें इसकी सज़ा मिले न कहीं
कि बड़ा बोल उसे पसंद नहीं,

**बीवी :** आपको क्या ख़बर खुदा है गवाह
मैंने छोड़ी नहीं कोई दरगाह
रोई पीरों-फ़क़ीरों के आगे
कि नसीबा किसी तरह जागे
जल्दी इन हाथों में लगे मेंहदी
दर पे उसकी बरात उतारूं मैं
उसकी डोली पे जान वारूं मैं
बोझ ऐसी भी वो नहीं, मुझको
किसी कुएं में ढकेल दूं उसको
उसका सेहरा खुदा मुझे दिखलाये
चाहे फिर आंख बंद हो जाये

*सौदागर लड़कियों के हंसने की अ*
*सौदागर और उसकी बीवी चौंककर*
*की तरफ देखते है।*

*सौदागर के घर महजबीं का कमरा।*
*महजबीं के सिंगार के कमरे में उसकी कुछ सहेलियां भी सज-संवर कर आ चुकी हैं। महजबीं सिंगार कर रही है।*

**परवीन :** **(महजबीं की सहेली)** : बस बहुत हो चुका सिंगार चलो
आज होगा कोई शिकार चलो
इस सिंगार और इन अदाओं पर
दिल करेगा कोई निसार चलो

**महजबीं :** (परवीन से) : क्या हुआ है किसी से वादा-ए-दीद
कैसी ये रट है बार-बार चलो

**महजबीं की दूसरी सहेली :** उम्र ये दिल से खेलने की है
कैसी जीत और कैसी हार चलो
*परवीन महजबीं को गुदगुदाने लगती है। वह दीवान पर लोट-पोट हो जाती है। उसके साथ की और लड़कियाँ खिलखिलाकर हंसती हैं।*
*सौदागर मियां बीवी लड़कियों की हंसी सुनकर चौंकते हैं।*

**सौदागर :** चुप रहो महजबीं जो आयेगी
सुन के ये बातें रूठ जायेगी

**बीवी :** वो अभी इस तरफ़ न आयेगी
सैर करने जो छत पे जायेगी

**सौदागर :** साथ हमजोलियां भी हैं...

**बीवी :** दो-चार, सबकी सब महजबीं पे जान निसार
महजबीं चांद वो सितारे हैं
सबने दिल अपने उस पे वारे हैं
*महजबीं और उसकी सहेलियां नज़र आती हैं। सब उसके साथ ज़ीने की तरफ़ बढ़ती है।*
मां आवाज़ देती...'महजबीं!'

**बेटी :** अम्मा आती हूं।

**मां :** लाडली ठहरो. कुछ तो अपनी बलाएं लेने दो।

**महजबीं :** (तुनक कर) मैं कहीं ऐसी दूर जाती हूं
छत से होकर अभी तो आती हूं

**मां :** शाम के वक़्त छत पे मत जाओ
पढ़ दूं नादे-अली इधर आओ
महजबीं (इतरा के) पांव पटकने लगती है और बनावटी अंदाज़ में रूठकर मां के पास खड़ी हो जाती है।
मां नादे-अली पढ़ के फूंकती है।

**महजबीं :** (तुनक कर) अम्मां ये सब जो आप करती हैं
बे सबब इस क़दर जो डरती हैं
*माँ महजबीं के गले में एक तावीज़ डाल देती है। उससे गला और सज जाता है। मां सिर से पांव तक उसकी बलाएं लेती है। महजबीं ज़ीने की तरफ़ देखती है। परवीन ज़ीने पर क़दम रख चुकी है।*
*महजबीं मां की तरफ़ सवालिया नज़रों से देखती है। मां मुस्कुरा के उसे जाने की इजाज़त देती है। वह उछलती हुई ज़ीने की तरफ़ जाती है।*

**कट**

*सौदागर का घर, छत।*
*महजबीं, परवीन और दूसरी सहेलियां छत पर पहुंचती हैं।*

**परवीन :** शुक्र है जल्दी छट गया बादल
वरना मुश्किल था छत पे आना भी

**महजबीं :** जाने किस तरह हो गई बारिश
नहीं बारिश का ये ज़माना भी

**परवीन :** (छेड़ने के अंदाज़ में) कुछ अकेले हमीं नहीं हैं यहां
आया है तेरा इक दीवाना भी
*परवीन महजबीं का मुंह दूसरी तरफ़ मोड़ देती है। दूसरी छत पर नवाब मिर्ज़ा खड़े हैं और इस तरफ़ देख*

*रहे हैं।*

*लड़कियां हंसती हैं।*

नवाब मिर्ज़ा की आवाज़—

एक दिन चर्ख़ पर जो अब्र आया
कुछ अंधेरा सा हर तरफ़ छाया
खुल गया जब बरस के वो बादल
क़ौस[1] तब आसमाँ पे आई निकल
दिल मिरा बैठे-बैठे घबराया
सैर करने को बाम पर आया
ख़फ़्क़ाँ[2] दिल का जब बहलने लगा
इस तरफ़ उस तरफ़ टहलने लगा
देखा एक सिम्त जो उठा के नज़र
सामने थी वो दुख़्त-ए-सौदागर[3]
साथ हमजोलियाँ भी थीं दो-चार
देखती थीं वो आसमां की बहार
बाम से कुछ उतरती जाती थीं
चुहलें आपस में करती जाती थीं

**महजबीं** : पूछ ले तू पुकार के परवीन
वो मिरा या तेरा दीवाना है

*लड़कियां इस बात को सुन कर हंसती हैं।*

**कोई सहेली** : महजबीं इसका हाथ उठे न उठे
इससे छोटी हो तुम सलाम करो

*इस बात पर लड़कियां क़हक़हा लगाती हैं।*

**परवीन** : वो नज़र की ज़बां न समझेगा
मुंह से कुछ फूटो कुछ कलाम करो

**एक सहेली** : (सबसे कहती है)
क्यूं खड़ी हो यहां चुड़ैलों चलो
मत ख़राब उनकी प्यारी शाम करो
जल्दी ये दोनों एक हो जायें

---

द्रधनुष 2. घबराहट, 3. सौदागर की बेटी

ये दुआ चल के सुबह शाम करो

**महजबीं:** हम भी चलते हैं इक ज़रा ठहरो
आसमां कितना साफ़ है देखो

**परवीन :** आसमां साफ़ है ज़रूर मगर
तेरी नीयत ज़रा भी साफ़ नहीं
आसमां का बहाना है बेकार
कह दे कुछ हो चला है उससे प्यार
*सब लड़कियां क़हक़हा लगाती हैं।*

***महजबीं*** *(रूठने के अंदाज़ में) हाथों में मुंह छुपा लेती है। और आंखों से जब हाथ हटाती है तो सब सहेलियां जा चुकी हैं। वह छत पर अकेली रह जाती है।*

**कट**

**दूसरी छत**

उधर नवाब मिर्ज़ा अकेले खड़े हैं। महजबीं को देख रहे हैं
नवाब मिर्ज़ा एक ग़ज़ल सुना रहे हैं—
जब से देखा है तुझको इस उलझन में हूं
तुझको चाहूं कि मैं तेरी पूजा करूं
मेहरबां होके तू ही बता दे मुझे
हुस्न इतना नज़र आये तो क्या करूं
तू बढ़ी धीरे-धीरे जो मेरी तरफ़
दिल ने मुझसे किया मैंने दिल से सवाल
चूम लूं मैं तड़प के ये संदल से पांव
या इसी पांव पर कोई सजदा करूं

***महजबीं*** *धीरे-धीरे ज़ीने की तरफ बढ़ने लगती है।*

**नवाब मिर्ज़ा :** जा रही हो मगर जा न पाओगी तुम
मुझको मालूम है लौट आओगी तुम
*महजबीं जीने के पास से लौट आती है।*

**नवाब मिर्ज़ा :** दो धड़कते दिलों का तक़ाजा है ये
तुम हमें और हम तुमको देखा करें
दो दिलों में जो थोड़ी सी-दूरी है ये

**महजबीं :** अपनी दुनिया में शायद ज़रूरी है ये

**नवाब मिर्ज़ा :** दूरी इतनी भी हममें न बाक़ी रहे
तुम भी ऐसा करो हम भी ऐसा करें
नवाब मिर्ज़ा और महजबीं अपनी-अपनी छत पर अकेले खड़े एक दूसरे को देख रहे हैं कि अचानक महजबीं की नौकरानी मेंहदी ऊपर आती है। छत पर महजबीं उसको झिड़कती है :
बदतमीज़ी पे क्यूं उतर आई
क्यूं बुलाये बग़ैर इधर आई

**मेंहदी :** बैठी नाहक़ भी बोलें खाती हैं
अम्मां जान आपको बुलाती हैं
गैसू रुख़ पर हवा से हिलते हैं
चलिए अब दोनों वक़्त मिलते है

**कट**

*हवेली। नवाब मिर्ज़ा का कमरा।*
*नवाब मिर्ज़ा अपने कमरे में ख़ामोश और उदास बैठे हैं। आंखों में आंसू भरे हैं। होठों पर हल्की सी मुस्कुराहट है।*

**महजबीं की आवाज़ :** दूरी थोड़ी भी हममें न बाक़ी रहे
तुम भी ऐसा करो हम भी वैसा करें
*नवाब मिर्ज़ा (चौंक कर) इधर-उधर देखते हैं। आवाज़ को पकड़ने के लिए दौड़ते है। दीवार से टकरा जाते हैं। माथा ज़ख़्मी हो जाता है। वह सर पकड़कर बैठ जाते हैं।*
*नवाब मिर्ज़ा की मां घबराई हुई आती है। पूछती है :*

क्यूं अंधेरे में बैठे हो बेटा
और ये माथे पे ख़ून है कैसा

**नवाब मिर्ज़ा :** यूं ही थोड़ी-सी चोट लग गई है
बेख़याली की ये सज़ा मिली है

**मां :** कुछ तो बतला के कि क्या है हाल तिरा
किस तरफ़ है बढ़ा ख़याल तिरा

**नवाब मिर्ज़ा :** कैसे बतलाऊं क्या है हाल मिरा
दिल जहां है वहीं ख़याल मिरा

**मां :** दिल में गम मेरी जान किसका है
सच बता दे कि ध्यान किसका है
रंज किस शौला रू का खाते हो
शम्मः की तरह पिघलते जाते हो
ज़र्द चेहरे पर अर्ग़वाँ[1] की तरह
टुकड़े पोशाक है कताँ[2] की तरह
कौन-से माह रू पे मरते हो
सच कहो किसको प्यार करते हो
ये कहो महजबीं बला है कौन
तुमको ऐसा हसीं मिला है कौन
खाते हो, पीते हो न सोते हो
रोज़ उठ-उठ के शब में रोते हो
नहीं मालूम कौन है वो छिनाल
कर दिया मेरे लाल का ये हाल
मेरे बच्चे की जो कढ़ाये जान
सात बार उसको मैं करूं क़ुर्बान
अल्ला आमीं[3] से हम तो यूं पालें
आप आफ़त में जान यूं डालें
दिन को दिन समझी और न रात को रात
तल्फ़[4] की तेरे पीछे यूं औक़ात

---

1. एक सुर्ख़ रंग का फूल 2. एक क़िस्म का बारीक कपड़ा 3. लाड़-प्यार से
4. गंवाना

पाला किस-किस तरह तुम्हें जानी
कौन मिन्नत थी जा नहीं मानी
रौशनी मस्जिदों में करती थी
जाके दरगाह चौकी भरती थी
अब जो नामे-ख़ुदा जवान हुए
ऐसे मुख़्तार मेरी जान हुए
हां मियां सच है ये ख़ुदा की शान
तुम करो जान बूझ कर हलकान
हम तो यूं फूंक-फूंक रक्खें क़दम
आप देते फिरें हरेक पे दम
हम यहां रंजों-ग़म में रोते हैं
आप ग़ैरों पे जान खोते हैं
यूं मिटाओगे जानकर हमको
देखती हूं जो तेरा हाले-ज़बूं![1]
ख़ुश्क होता है मेरे जिस्म का ख़ूं
सुध न खाने की है, न पीने की
कौन-सी फिर उमीद जीने की
दिल पे गुज़रा है क्या मलाल तो कह
मुंह से नाशुदनी[2] अपना हाल तो कह

**नवाब मिर्ज़ा :** मैं तो कह दूं मगर सुनेगा कौन
आप आदी हैं फूल चुनने के
मेरे कांटे यहां चुनेगा कौन
है जो अपना पड़ोसी सौदागर
जिससे अब्बा मिया का झगड़ा है
उसकी बेटी को जब से देखा है
जां भी उसकी है दिल भी उसका है
जब से देखी है एक झलक उसकी
दिल को एक लम्हा मेरे चैन नहीं
ज़िंदगी मेरी चाहती हो अगर

---
1. बुरा हाल 2. असंभव, दुर्भाग्यपूर्ण

वहां पैग़ाम मेरा भिजवाओ
मेरी शादी का है अगर अरमान
ब्याह के महजबीं को घर लाओ
**मां :** मैं अगर तेरी बात मान भी लूं
तेरे बाबा कभी न मानेंगे
झुकना दुश्वार तेरे बाप का है
**नवाब मिर्ज़ा :** उनको समझाना काम आपका है

**कट**

*हवेली। दस्तरख़्वान बिछा हुआ है। हैदर अली अकेले दस्तरख़्वान पर बैठे हैं। बेगम आती हैं।*

**हैदर अली :** तुम अकेली यहां चली आईं
साथ बेटे को क्यूं नहीं लाईं
**बेगम :** उसने दो दिन से कुछ नहीं खाया
**हैदर अली :** और इस वक़्त भी नहीं आया
**बेगम :** ग़म से बेचारा हो गया है निढाल
देखा जाता नहीं अब उसका हाल
बचना उसका है एक मुश्किल बात
ज़िंदगी उसकी है अब आपके हाथ
**हैदर अली :** तुम ये क्या कह रही हो बात है क्या
**बेगम :** जो हमारे पड़ोसी हैं
**हैदर अली :** आग़ा!
**बेगम :** जी वही उनकी एक बेटी है
आपके बेटे को है उससे प्यार
**हैदर अली गरजते हैं :** ना समझ नामुराद नाहंजार[1]
**बेगम :** ज़िंदगी बेटे की है फिर दुश्वार
**हैदर अली :** कह दो जो उसको करना है कर जाय
कल का मरता हो वो आज ही मर जाय

1. बेढंगा, अशिष्ट

**बेगम** उसमे कोइ बुराइ है आखिर
**हैदर अली :** हम हैं नव्वाब और वो ताजिर[1]
जिससे अब तक ख़रीदे हैं क़ालीन
उससे रिश्ता हमारी है तौहीन
कभी क़ालीन फिर मंगायेंगे
हम वहां से बहू न लायेंगे
**बेगम :** आज तक माना आपका कहना
आज मुश्किल है मेरा चुप रहना
आपको अपनी आन प्यारी है
मुझको बेटे की जान प्यारी है
शादी बेटे की मैं रचाऊंगी
आग़ा भाई से मिलने जाऊंगी
और कहूंगी कि वाह भाई वाह
याद है आप कहते थे अक्सर
कि पड़ोसी से दुश्मनी है गुनाह
दुश्मनी हम मिटाने आये हैं
मुर्ग़ की बात दोनों हंस के भुलाएं
दिल के रिश्ते में आज बंध जाएं
आपकी बेटी और मेरा बेटा
कहिए बारात लेके कब आएं?
**हैदर अली :** तुमने ऐसा किया तो सुन रक्खो
बैठ के टेसुए बहाओगी
छुरी गर्दन पे हम चलायेंगे
इस हवेली को भी जलायेंगे
*हैदर अली कमर में बंधी हुई छुरी खोल कर अपनी गर्दन पर रख लेते हैं। बेगम घबराके रोने और फ़रयाद करने लगती हैं।*
**बेगम :** मेरे मौला मेरी मदद को आओ
आनी बांदी पे कुछ तरस खाओ

---
1. व्यापारी

गिरने वाली हू मै सम्हालो मुझे
बेवा होने का हू बचालो मुझे
फेंक दीजे क़रौली[1] बहरे-ख़ुदा
सदमा है मुर्ग़ का अगर इतना
आग़ा के घर कभी न जाऊंगी
उम्र भर दुश्मनी निभाऊंगी

**कट**

*सौदागर का घर। महजबीं का कमरा। महजबीं चोरों की तरह दबे पांव अपने कमरे आती है। दरवाज़ा बंद, खिड़कियां बंद करती फिर एक ख़ूबसूरत लिफ़ाफ़े में कोई ख़त बंद करती है तो हाथ कांप रहा है, माथे पर पसीना झलक आया है। इतने में कोई दरवाज़ा खोलता है।*

**मेंहदी :** बिटिया क्या आपने पुकारा है?

**महजबीं :** काम इक हमारा है
और सहारा फ़क़त तुम्हारा है

**मेंहदी :** कुछ सुनूं कैसा काम आख़िर है
हुक्म दीजे कनीज़[2] हाज़िर है

**महजबीं :** ख़ूने-दिल कब तलक पिये कोई
बेहया बनके क्या जिये कोई
नोज इनसान बेमुहब्बत हो
आदमी क्या न जिसमें ग़ैरत हो
तू सलामत जहां में रह मेरी जान
निकले मां-बाप के तेरे अरमान
वास्ते मेरे अपना दिल न कढ़ा
चांद से बन्नो घर में ब्याह के ला
है यही लुत्फ़ ज़िंदगानी का

1. छुरी 2. दासी

देख सुख अपनी नौजवानी का

**महजबीं** : कनीज़ से पूछती है :

रहते हैं जो पड़ोस में अपने

क्या गई है कभी तू घर उनके

**मेंहदी** : पहले तो रोज़ आना-जाना था

**महजबीं** : मर्द उस घर में कितने रहते हैं

**मेंहदी** : एक तो हैं वही बड़े हज़रत

बड़े नव्वाब जिनको कहते हैं

**महजबीं** : उनका कोई बेटा है?

**मेहदी** : नाम उनका नवाब मिर्ज़ा है

**महजबीं** : तू ये ख़त मेरा उनको पहुंचा दे

तुझको उम्र इसका मेरा मौला दे

**मेंहदी** : इश्क़ को मानती हूं मैं मासूम

हर किसी को ये कुछ न हो मालूम

**महजबीं** : गर किसी को भनक मिली इसकी

राज़ मेरा अगर ये आम हुआ

चली जाऊंगी सबको छोड़ के मैं

जान दे दूंगी सर को फोड़ के मैं

**मेंहदी** : बिटिया कुटनी मुझे समझती हो

ऐसी-वैसी मुझे समझती हो

ज़िंदगानी से हाथ धोऊंगी

जान जाये ज़बाँ न खोलूंगी

*हवेली। दीवानख़ाना।*

*नवाब मिर्ज़ा दोस्तों में उदास बैठे हैं। एक दोस्त पचीसी की बिसात बिछाता है। और कहता है :* दोस्त आओ

एक बाज़ी आज हो जाये

दोस्त वो जो दिल दोस्त का बहलाये

*नवाब मिर्ज़ा (व्यग्र होकर)* नहीं, रहने दो जान खाओ न

**दोस्त** : राज़ दिल का हमें बताओ न

दोस्त हैं हम नहीं कोई दुश्मन

बात हमसे कोई छुपाओ न
खोये-खोये हो रोये-रोये हो
बात क्या है हमें बताओ न

**नवाब मिर्ज़ा :** हम सताये हुए किसी के हैं
यारो तुम तो हमें सताओ न

*मेंहदी सामने से गुज़रती, मुस्कुरा के नवाब मिर्ज़ा को देखती हुई हवेली में चली जाती है। उसके हर अंदाज़ से ज़ाहिर हो रहा है कि कोई ख़ास बात है। नवाब मिर्ज़ा खड़े हो जाते हैं :*

आ गया याद एक ज़रूरी काम
फिर मिलेंगे अभी तो जाओ न

*महफ़िल बर्ख़ास्त हो जाती है। नवाब मिर्ज़ा दीवानख़ाने में अकेले रह जाते हैं। मेंहदी आड़ से लोगों को विदा होते देखती फिर दीवानख़ाने में चली जाती है। नवाब मिर्ज़ा को अकेला पाकर उनके क़रीब जाती और ख़त देती है। ख़त देते हुए कहती है :*

बिटिया ने आपको दिया है ये
राज़ रखना इसे कहा है ये

*नवाब मिर्ज़ा लिफ़ाफ़ा लेके उसे चूम लेते हैं :*

राज़ रखूंगा इसको तुम न घबराना

**मेंहदी :** मैं चलूं।

**नवाब मिर्ज़ा :** जाओ थोड़ी देर के बाद इसका जवाब ले जाना।

*मेंहदी चली जाती है।*

*हवेली। दीवानख़ाना।*

*नवाब मिर्ज़ा दरवाज़े, खिड़कियां सब बंद करके लिफ़ाफ़ा खोलते हैं, लिफ़ाफ़ा खुलते ही महजबीं की आवाज़ सुनाई देती है।*

**महजबीं :** हो ये मालूम तुमको बादे-सलाम
ग़मे-फ़ुर्क़त[1] से दिल है बेआराम

---

1. बिछोह का दुःख

अपने कोठे पे तू नहा आता
दिल हमारा बहुत है घबराता
शक्ल दिखला दे किबरिया के लिए
बाम[1] पर आ ज़रा ख़ुदा के लिए
इस मुहब्बत पे हो ख़ुदा की मार
जिसने यूं कर दिया मुझे लाचार
काट ले कोई धड़ से सर मेरा
बाल बीका न हो मगर तेरा
मैं दिलो-जां से हूं फ़िदा तेरी
अब तू क्यूं ठंडी सांसे भरता है
क्यूं मेरे दिल के टुकड़े करता है
मैं अभी तो नहीं गई हूं मर
क्यूं सुजाई हैं आंखें रो-रो कर
इस क़दर हो रहा है क्यूं ग़मगीं
क्यूं मिटाता है अपनी जाने-हज़ीं
सारे उल्फ़त ने खो दिये औसान
वरना यूं लिखती मैं ख़ुदा की शान
अब कोई इसमें क्या दलील करे
जिसको चाहे ख़ुदा ज़लील करे

**कट**

*सौदागर का घर।*
*महजबीं का कमरा। मेंहदी कमरे से बाहर आ रही है। उसको बाहर करके दरवाज़ा बंद करती है और खत पढ़ना शुरू करती है। नवाब मिर्ज़ा की आवाज़ गूजने लगती है :*
नवाब मिर्ज़ा की आवाज़ :
बन गई यां तो जान पर मेरी

1. घर की बाहरी दीवार·

ख़ूब ली आपने ख़बर मेरी
हिज्र[1] में मरके ज़िंदगानी की
अब भी पूछा तो मेहरबानी की
जब से देखा है आपका दीदार
दिल से जाता रहा है सब्र-ओ-क़रार
पूछता है जो कोई आकर हाल
और होता है मेरे दिल को मलाल
कहूं किस-किस से इस कहानी को
आग लग जाये इस जवानी को
पाता ताक़त जो तालिब-ए-दीवार[2]
बाम पर दिन में आता सौ-सौ बार
जब से पहुंचा है ये तेरा मक्तूब[3]
जिंदगी का बंधा है कुछ उस्लूब[4]
पेशक़दमी जो तुमने की मेरे साथ
उसमें ज़िल्लत की कौन सी है बात
नहीं कुछ इसमें आप ही का क़सूर
मेरी उल्फ़त का ये असर है हुज़ूर
चारपाई पे कौन पड़ के मरे
कौन यूं एड़ियां रगड़ के मरे
इश्क़ का नाम क्यूं डुबो जाएं
आज ही जान क्यूं न खो जाएं
जब तलक चर्ख़-ए-बेमदार[5] रहे
ये फ़साना भी यादगार रहे
बोली घबरा के फिर ठहर मेरी जान
कुछ सुना भी कि क्या बजा इस आन
हसरते-दिल निगोड़ी बाक़ी है
और यहां रात थोड़ी बाक़ी है
तुम तो वो लोग होते हो जल्लाद
नहीं सुनते कोई करे फ़रियाद

---

1. वियोग 2. दर्शन का इच्छुक 3. पत्र 4. शैली 5. आकाश

अब जो भेजी है आपने तहरीर
ये है लाज़िम कि वो करो तदबीर
सख़्तियां हिज्र[1] की बदल जाएं
अब मैं लिखता हूं आपको ये हुज़ूर
वस्ल की फ़िक्र चाहिए है ज़रूर
तूने ग़फ़लत जो इसमें की ऐ माह
हाल मेरा कमाल होगा तबाह
ग़ैर है हिज्र से मिरी हालत
ग़म उठाने की अब नहीं ताक़त
दिल पे आफ़त अजीब आई है
जान बच जाये तो खुदाई है
तपिशे-दिल ने कर दिया हुशियार
वहम आने लगे हज़ार-हज़ार
आशना[2] दोस्त आ गये जो कभू
जिसने देखा निकल पड़े आंसू
झूठ समझेंगे ये हुज़ूर नहीं
जान जाती रहे तो दूर नहीं

*हवेली, दीवान ख़ाना।*

*मेंहदी दीवानख़ाने से निकल रही है। नवाब मिर्ज़ा के हाथ में एक ख़त है। महजबीं की आवाज़ गूंज रही है।*

**आवाज :** ज़िक्र इन बातों का बयां क्या था
छेड़ने को तिरे ये लिक्खा था
ऐसी बातें थीं कब यहां मंज़ूर
था फ़क़त तेरा इम्तिहां मंज़ूर
ये तो लिक्खे थे सब हंसी के कलाम
वरना इन बातों से मुझे क्या काम
रंज आ जाता है इसी कद[3] से
न बढ़े आदमी कभी हद से

---

: 2 प्रिय, आत्मीय, 3. हठ, ज़िद

तालिबे-वस्ल[1] जा हुए हम-से
हैगा सादा मिज़ाज जम-जम से

**कट**

*सौदागर का घर। ज़नानख़ाना।*
*सौदागर, उसकी बीवी और बनारस वाले जब्बार भाई।*

**जब्बार भाई :** अब भी आ जाय गर समझ में ये बात
मेरे बेटे के हाथ में दे दो
अपनी बेटी का तुम खुशी से हाथ
कड़वी बातें मैं सब भुला दूंगा
दुश्मनी पहुंची जिस बुलंदी पर
वहीं से उसको मैं गिरा दूंगा
जो भी झगड़ा है साफ़ कर दूंगा
क़र्ज़ सारा मुआफ़ कर दूंगा

**सौदागर की बीवी, जब्बार की बहन :**
भाई, बेटी हमारी गाय नहीं
कि हमें क़र्ज़ देके सूद में तुम
इसको खूंटे से खोल ले जाओ
ज़िंदगी खाद है, न भूसा है
कि तराजू लिये कभी आओ
और उसे आके तौल ले जाओ
तुमने जिस घर में दी है अपनी बहन
कुर्की उस घर में लेके तो आओ
तुम्हीं बोलोगी आख़िरी बोली
मुझको नीलाम पर चढ़ाओ तो

**सौदागर :** (बीवी से) चुप रहो जाके तुम अलग बैठो
कि ये बातें हैं मर्दों की बातें

**जब्बार :** मैंने चाहा था ख़त्म हो झगड़ा
और सुनाने लगी ये सलवातें[2]

**सौदागर :** (क्षमा के साथ) आप चिड़चिड़िया उनको कहते हैं

1. मिलन का आकांक्षी 2. अपशब्द, गालिया

जब्बार : जभी तो दूर उनसे रहते हैं
सौदागर : दिल की अच्छी है ये ज़बां की नहीं
हम ज़बां के भी ज़ख्म सहते हैं
आप इसका बुरा न मानिएगा
हैं वो नादान बस ये जानिएगा
मैं समझता हूं आपकी आदत
करे गुज़रेगा जो वो ठानेगा
लाठी की चोट चाहे जैसी हो
चोट से पानी फट नहीं सकता
ख़ून का रिश्ता चाहे कट जाये
दिल का रिश्ता तो कट नहीं सकता
जब्बार : मुझको बीवी ने ये क़सम दी थी
लखनऊ जाते हो तो जाओ तुम
बात शादी की पक्की कर आओ
या सभी रिश्ते तोड़ आओ तुम
सिर्फ़ बीवी को दूं मैं क्यूं इल्ज़ाम
सुन लो गुस्सा मुझे भी आया बहुत
साफ़ इनकार करके शादी से
तुमने मेरा भी दिल दुखाया बहुत
फिर भी मायूस मैं नहीं हूं अभी
शायद इक रोज़ तुमको अक़्ल आये
वक़्त ऐसी ही बदले इक करवट
आज मुश्किल है जो, कल हो जाये
नौकरानी भी एक लाये हैं
कर चुकी हैं हमारे घर पे काम
इसके सुन हमने आज़माये हैं
नाम तुलिया है शक्ल मामूली
लेकिन आगा है उसकी सीरत ख़ूब
उसको लाया हूं इस यक़ीन के साथ
वो करेगी तुम्हारी खिदमत ख़ूब

**आग़ा पुकारते हैं :** सुतनी हो!

**बीवी :** हो गईं ख़त्म मर्दों की बातें

**आग़ा :** वहां से मत सुनाओ सल्वातें
भाई लाये हैं नौकरानी भी

**बीवी :** भाई करते हैं साथ-साथ सदा
गुस्सा भी और मेहरबानी भी

**आग़ा :** वो कहां है ज़रा इधर भेजो
देख लें हम भी इक नज़र भेजो

**बीवी :** (पुकार के) मैंने ख़ूब इसको देख-भाल लिया
सारा बेटी का काम सौंप दिया
*जब्बार इस फ़िक़रे पर मुस्कुराते हैं*

**कट**

*सौदागर का घर। ज़नानख़ाना महजबीं का कमरा महजबीं आईने के सामने बैठी है। नौकरानी बाल सँवार रही है। इतने में मेंहदीं आती है।*

**महजबीं :** मेंहदीं क्या कोई ख़बर लाई

**मेंहदी :** हां ख़बर लाई उनसे मिल आई
*मेंहदी बेख़याली में इतना कहके मुंह पर हाथ रख लेती है और नई नौकरानी की तरफ़ देखती है।*

**महजबीं :** बुआ जाके दुपट्टा चुन डालो। बाल तो मेंहदी बना देगी।
*बुआ मानीख़ेज़ अंदाज़ में मुस्कुराती और बाहर चली जाती है।*

**महजबीं :** (पूछती है) मेंहदी उनसे मिल सकी तू कहां?

**मेंहदी :** आम के बाग़ में है बंगला जहां
उसी बंगले में अब वो रहते हैं
हिज्र के सदमे दिल पे सहते हैं
मैंने पूछा मिज़ाज कैसा है?
अश्क इसके जवाब में भरके

आपको जब स इक नजर देखा
फिर न ग़म से कभी मफ़र देखा
सारी दुनिया से रिश्ता तोड़ लिया
ऐशो-राहत से मुंह को मोड़ लिया
न तो खाते हैं कुछ न पीते हैं
जाने कैसे बिचारे जीते हैं
हाथ सीने पे लब पे आपका नाम
सुबह होती है यूं ही होती शाम
मैंने देखे हैं कितने दीवाने
ऐसे दीवाने कम ही होते हैं
दिन गुज़रता है आहो-ज़ारी में
रातें कटती हैं तारे गिन-गिन के
कुछ तो रहम उन पे खाइए बीवी
अब तो मेहमां हैं चंद ही दिन के

**महजबीं :** तू समझती है मेंहदी मुझको
क्या करूं मैं ज़रा बता मुझको
उनका जो हाल है वही मेरा
है सम्हाले हुए हया मुझको

**मेंहदी :** कल है नौचंदी चलना है दरगाह

**महजबीं :** भूले बैठी थी मैं खुदा की पनाह

**मेंहदी :** उसके नज़दीक ही वो बंगला है
जहां नव्वाब मिर्ज़ा रहते हैं
मौत भी हाथ रक्खे कानों पर
जैसे वो ज़िंदगी को सहते हैं
बिटिया, दरगाह से पलटते हुए
मिल के कर लीजे उनसे दो बातें
मैं समझती हूं कुछ गुनाह नहीं
इस तरह की हसीं मुलाक़ातें

**महजबीं :** मेंहदी मुझ पे हौल तारी है
तू जो कहती है होगा वो कैसे

सामना उनका क्या करूंगा मैं
हाथ मेरे अभी से हैं ठंडे

**मेंहदी :** मैं कहारों से बात कर लूंगी
वो सदा इसको राज़ रक्खेंगे

**महजबीं :** वो बिचारे तो हैं बहुत अच्छे
हैं मिरे ख़ैरख़्वाह वो सच्चे

**मेंहदी :** (पूछती है) और फिर किससे है कोई ख़तरा
क्या खुलेगी कभी ज़बाँ मेरी
बात दिल की रहेगी दिल में सदा
तन में चाहे रहे न जाँ मेरी

**महजबीं :** मेंहदी ये ज़रूर मुमकिन है
तेरी तदबीर[1] काम की निकले
मुझको ये ख़ौफ़ खाये जाता है
जाने वो कैसा आदमी निकले
मैं अगर उससे मिलने जा पहुंचूँ
वो ख़ुदा जाने मुझको क्या समझे
मैं जो मिल के भी दूर-दूर रहूं
वो न इसको कोई अदा समझे
उनसे मिलना ज़रूर चाहती हूं
दिल धड़कता है सिर्फ़ इस डर से
वहां जाके कहीं न पछताऊं
कहीं रोती न लौटूं उस घर से

**मेंहदी :** ऐसी बातें न सोचिए बीवी
डोली लेकर खड़े हैं कबसे कहार
शाम होती है दूर है दरगाह
जल्द हो जाइए अब आप सवार

*महजबीं डोली में सवार होती है*
*आम का बाग़*

---

1. युक्ति, उपाय

*बंगला। बंगले के बाहर नवाब मिर्ज़ा और सलाम दोनो खड़े हैं। नवाब मिर्ज़ा बेचैन होके सलाम से पूछते हैं क्या तेरी मेंहदी कर सकेगी वो काम?*

**सलाम :** उसने वादा किया है मुझसे हुज़ूर
है यक़ीन डोली लायेगी वो ज़रूर

*कहार डोली लेके बाग़ में दाख़िल होते हैं।*
*मेंहदी आगे-आगे चल रही है। मेंहदी इशारा करती है, कहार डोली फाटक में रख देते हैं। मेंहदी डोली के पास खड़ी है।*
*वह पर्दा उठाती है।*
*महजबीं डोली से निकल कर तेज़ी से एक तरफ़ चली जाती है।*
*आम का बाग़।*
*बंगला।*
*सलाम और नवाब मिर्ज़ा दोनों बंगले के बाहर बेचैन-से नज़र आते हैं।*

**नवाब मिर्ज़ा :** दो महीने से वो नहीं आई
ख़त भी तो मेंहदी नहीं लाई

**सलाम :** घर का सबका अकेले करना पड़ा
उनका हुक़्क़ा भी मुझको भरना पड़ा

**तुलिया :** नज़्र दिलवा के लौट आई हैं
ये तबर्रुक भी साथ लाई हैं
*तुलिया बेगम को तबर्रुक देती है। तबर्रुक लेते हुए*
महजबीं भी वहां मिली भी कहीं!
*तुलिया कान पर हाथ रख लेती है।*
पूछिए मुझसे ये हुज़ूर नहीं

**बेगम :** क्यूं नहीं कोई ऐसी बात है क्या
ख़ैर जो भी हो साफ़-साफ़ बता

*तुलिया सौदागर की तरफ़ देखती है।*
जो भी देखा है अपनी आंखों से
किसी दिन आपको दिखाऊंगी
अभी मजबूर कीजिए न मुझे
बात मैं सब ही कुछ बताऊंगी

**सौदागर :** (डाँटकर) बाद में जो बताने वाली है
तुझको वो बात अभी बताना है
हमसे क्या कुछ छुपा रही है तू
जुर्म सच्चाई का छुपाना है

**तुलिया :** आपसे क्या बताऊं कैसे कहूं
ख़ौफ़ से जान सूखी जाती है
दिल से आती है होंठ तक जो बात
होंठ तक आके लौट जाती है

**बेगम :** (गुस्सा होकर) बोल, है महजबीं की बात कोई
मेंहदी क्या कर रही है घात कोई

**तुलिया :** आज दरगाह से पलटते हुए
बाग़ में डोली उसकी रुकवा दी
वो जो नव्वाब मिर्ज़ा हैं बेगम
उनकी मेहमां है आज शहज़ादी
मैंने चाहा कि फोड़ लूं आंखें
कि इन आंखों ने ऐसा देखा क्यूं
मेंहदी ने उन्हें फ़रेब दिया
वरना शहज़ादी ऐसा करती क्यूं

**सौदागर :** (गरजकर) भाग जा भाग जा यहां से चुड़ैल
वरना खींचूंगा मैं ज़बां तेरी
और जो ये होगी सिर्फ़ इक तुहमत
कव्वे खाएंगे बोटियां तेरी
*तुलिया वहां से भाग जाती है।*

**बीबी :** बात तुलिया की झूठ होती अगर
आ गई होती वो अभी तक घर

लौट जाती थी शाम से पहले
कभी होती नहीं थी इतनी देर
किस तरह हो गई वो शेर इतनी

*सौदागर झल्लाया हुआ कमरे में जाता है और वहां से बंदूक़ निकाल लाता है।*

महजबीं जिससे बाप ने अब तक
कड़वी बोली कोई नहीं बोली
आने दो बेहया को लौट के घर
मार दूंगा मैं आज उसे गोली

**बेगम :** चुप रहो शोर क्यूं मचाते हो
सोई दुनिया को क्यूं जगाते हो
कभी बहकें न आदमी के क़दम
अपना अंजाम अगर नज़र में रहे
जो हुआ सो हुआ कुछ अब तो करो
बात घर की हमेशा घर में रहे

*इतने में कहार आते हैं और डोली ड्योढ़ी में रखते हैं। मां झपट के जाती है और महजबीं को खींचके डोली से निकाल लेती है।*

बेहया सच बता गई थी कहां
तब से इस वक़्त तक रही थी कहां
और गई थी तो क्यूं फिर आई यहां
रास्ते में मिला न कोई कुआं
तुझे बहका रहा है शोहदा[1] कौन
कुछ सूनूं है नवाब मिर्ज़ा कौन

**महजबीं :** वो बहुत मुझको प्यार करते हैं
जान मुझ पर निसार करते हैं

**मां :** आदमी वो नहीं है शैतां है

**महजबीं :** वो बहुत ही शरीफ़ इनसां है

---

1. बदमाश, लुच्चा

**मां :** (तमांचा मारती है) फिर कभी जाएगी वहां वदज़ात
**महजबीं :** हम वनाएंगे ज़िंदगी एक साथ
**सौदागर :** अब ये बाहर कभी निकल न सके
सुलगे दिन-रात और जल न सके
*मां घसीट कर ले जाती है और उसको उसके कमरे में बंद कर देती है।*
**मां :** यही कमरा यही मज़ार तेरा
मौत तेरी बनेगी प्यार तेरा

**कट**

**महजबीं :** चांद से चांदनी अलग हो जाए
शम्अ से रौशनी अलग हो जाए
रंग कोई रहे न फूलों में
पैंग बाक़ी रहे न झूलों में
तोड़ दें रिंद सारे पैमाने
शम्अ से रूठ जाएं परवाने
मस्जिदों में कभी न जाएं लोग
मंदिरों से भी लौट आएं लोग
घंटियां सारी बज के थम जाएं
और अज़ानें गलों में जम जाएं
उससे मैं दूर हो नहीं सकती
क़ैद कर दो कि दफ़्न कर दो मुझे
इतनी मजबूर हो नहीं सकती

**कट**

*सौदागर का घर।*
*दालान।*
*बाप गुस्से में तिलमिला रहा है।*

**मां :** देखते हो है कैसा भूत सवार

बाप : बच्चे यूं ही ख़राब होते हैं
मां जो उनसे करे ज़ियादा प्यार
मां : इससे तस्कीन हो अगर तुमको
सारे इल्ज़ाम मेरे सर रख दो
मैं कोई रोक सकती हूं तुमको
तुम जला के अभी ये घर रख दो
चीख़ चिल्ला के क्या मिलेगा हमें
बैठ आराम से तो कुछ सोचें
अपनी बच्ची से जो क़ुसूर हुआ
होता रहता है ऐसा दुनिया में
इसपे पर्दा तो डालना होगा
कोई रस्ता निकालना होगा
सोचो ये बात आम होगी अगर
कौन थामेगा महजबीं का हाथ
डोली कौन उसकी लेके जाएगा
लेके कौन आएगा यहां बारात
मौत भी अब न जल्दी आएगी
लोग थूकेंगे उसके जीने पर
बूढ़ी हो जाएगी इसी घर में
यूं ही बैठी रहेगी सीने पर
ये अगर कोई गुल खिला बैठी
भाग के उसके घर जो जा बैठी
किसको फिर मुंह दिखाएंगे हम लोग
कहां छुपने को जाएंगे हम लोग
कैसे अपनाएगी हमें दुनिया
आंखें कैसे मिलेगी दुनिया से
बात मानो मिरी तो अब उसकी
शादी कर दो नवाब मिर्ज़ा से
सागर : जानती हो नवाब मिर्ज़ा को
बीवी : हां वो हैदर अली का बेटा है

अब ये सब सोचने का वक्त कहा
किसका बटा है किसका पाता ह
मुर्ग़ों-वुर्ग़ों का झगड़ा रहने दो
अब पुरानी न कोई वात करो
नाक अपनी अगर बचाना है
सुलह हैदर अली के साथ करो

**सौदागर :** मैं तो ये मूंछ तभी गिराऊंगा
क्या करेंगे वो ये ख़ुदा जाने
जैसे हैदर अली हैं ऐसे कहीं
मैंने देखे नहीं है दीवाने

*सौदागर उठता है।*
*बीवी मुस्कुराती और आसमान की तरफ़ आंचल फैला के कामयाबी की दुआ करती है।*

**कट**

*हवेली। दीवान ख़ाना।*
*हैदर अली मुसाहिबों के साथ शतरंज खेल रहे हैं। नूर बाहर से आकर ख़ुशी मालूम करता है और उनका मुंह देखने लगता है।*

**हैदर अली :** क्या तुझे हमसे कोई काम है नूर

**नूर :** आग़ा साहब वहां खड़े है हुज़ूर
कहते हैं है हुज़ूर से कोई काम

**हैदर अली :** जाके उनसे कहो हमारा सलाम
और इज़्ज़त से उनको ले आओ
(मुसाहिबों से) होगी कुछ ख़ास बात तुम जाओ
*मुसाहिब सलाम करके चले जाते हैं। हैदर अली अकेले रह जाते हैं। नूर के साथ सौदागर आता है। हैदर अपनी जगह उठके और खड़े होके मुसाफ़हा करते है।*

**हैदर अली :** आइए कैसे मेरी याद आई

**आग़ा :** आप शर्मिंदा करते हैं भाई

**हैदर अली :** आप आये बड़ी इनायत की
ये तो कहिए कि कैसे ज़हमत की

**आग़ा :** नूर की तरफ़ देखकर चुप हो जाते है।

**हैदर अली :** (समझ लेते हैं) नूर तू क्यूं यहां खड़ा है जा
जाके जल्दी से ये चिलम भर ला
*नूर चिलम लेके चला जाता है। दोनों अकेले रह जाते हैं।*

**आग़ा :** आपने भाई ये सुना होगा
मैंने खुद भी कभी कहा होगा
दी है हमको खुदा ने इक दुख़्तर[1]
शुक्र उसका कि है वो नेक अख़्तर
मतलब उसको नहीं है दुनिया से
प्यार उसे है नवाब मिर्ज़ा से

*हैदर अली के चेहरे का रंग बदल जाता है।*
वो भी कुछ उसको प्यार करते हैं
कब के वो दोनों एक हो जाते
हुक्म का इंतज़ार करते हैं
आप अगर दोस्ती का हाथ बढ़ाएं
रूहें वो दोनों एक हो जाएं

**हैदर अली :** आग़ा क्या कह रहे हो होश में आओ
देखो नाहक़ न कोई जाल बिछाओ
रिश्ता मुझको नहीं ज़रा ये पसंद
अरे मख़मल में टाट का पैबंद
हमको खामोश पाके भूल गये
मुर्ग़ों की वो लड़ाई भूल गये
हार को हार मान लेता मैं
दुश्मनी की न ठान लेता मैं

---

1. बेटी

हमको धोका दिया बड़ा तुमने
अपनी बेटी को जाके समझा दो
भूल जाये नवाब मिर्ज़ा को
वो अगर शादी पर हुआ तैयार
सुन लो बेटे को मैं करूंगा आक़[1]
उसकी मां ने अगर किया मजबूर
सुन लो दे दूंगा मैं उसे भी तलाक़
आप से बहस की है किसको मजाल
है ये बच्चों की ज़िंदगी का सवाल
शौक़ से कीजिए ज़लील मुझे
हमने जो कुछ किया वो हमने किया
उसका भुगतान भुगतें क्यूं बच्चे

**हैदर अली :** आग़ा गुस्सा न मेरा भड़काओ
बात ये सुन लो और चले जाओ
मेरे बेटे का नाम आने न पाये
आपकी बेटी के फ़साने में
एक नव्वाब और एक ताजिर[2]
एक होंगे न इस ज़माने में

**आग़ा :** पूछ लीजे जनाब ये तो कभी
क्या ख़ुशी है नवाब मिर्ज़ा की

**हैदर अली :** अपने बेटे को जानता हूं मैं
है वो आवारा मानता हूं मैं
इतना बेशर्म वो नहीं फिर भी
जितनी बेशर्म आपकी बेटी

**कट**

*सौदागर का घर।*
*सौदागर का कमरा।*
*अपने कमरे में जाते हैं। नौकर उसी वक्त*

---

1. पुत्र के अधिकारों से वंचित करना 2. व्यापारी

*एक ख़त लाकर देता है। आग़ा ख़त उलट-पुलट देखते हैं।*

**आग़ा :** मुर्शिदाबाद से ख़त आया है

**बीवी :** देखो वो चाहते हैं क्या हमसे
जो कहीं कह दो उनसे हां झटसे
उनकी शादी की हो अगर जल्दी
लिख दो जल्दी है अब तो हमको भी

**आग़ा :** (पढ़ते हैं) आपके इक अज़ीज़ ने हमसे
कही है बात ये बड़े ग़म से
है परीशान आग़ा बेचारा
महजबीं हो गई है आवारा
सुनके ये हमने रिश्ता तोड़ दिया
था जो पहले ख़याल छोड़ दिया
आप हमसे ख़फ़ा तो होंगे ज़रूर
हम शराफ़त से अपनी हैं मजबूर

**सौदागर :** (ख़त फाड़ते हुए) बात देखो कहां-कहां पहुंची
हर जगह अपनी दास्तां पहुंची
*तुलिया ख़ुश-ख़ुश घर में आती है।*

**तलिया :** देख लो मैं भी क्या ख़बर लाई
कि बनारस से आये हैं भाई

**सौदागर :** मुझे उम्मीद थी वो आयेंगे
अपने आगे हमें झुकाएंगे

**भाई :** आप दोनों बहुत न हों हैरान
पहले जिस रिश्ता का था कुछ अरमान
जिससे तुम दोनों ने किया इनकार
तुलिया साहब का कमरा कर तैयार
मैं यहां कोई रहने आया हूं
जो सुना है वो कहने आया हूं
हर ज़बां पर यही है आज सुख़न[1]

---

[1] वचन

महजबीं का बिगड़ गया है चलन
बेटा मेरा है दिल से वो मजबूर
अब वो रिश्ता मुझे नहीं मंजूर
मेरा बेटा तो है बहुत भोला
मैं न ले जाऊंगा मगर डोला
महजबीं को बहू बनाऊंगा क्या
भानजी भी मैं अब नहीं कहता
देखो अब कौन लाता है बारात
देखें अब कौन थामे उसका हाथ
बेटी करती कभी न ऐसा क़ुसूर
रंग लाया है ये तुम्हारा ग़ुरूर

**सौदागर :** भाई हमसे हुई ज़रूर ख़ता
लेकिन इतनी भी दीजिए न सज़ा
मेरी इज़्ज़त है आपकी इज़्ज़त
भाई इज़्ज़त मेरी बचालो तुम
लो ये टोपी पड़ी है क़दमों पर
फिर से हमको गले लगाओ तुम
जो सुना है वो सारा सच तो नहीं
वहम कोई न दिल में पालो तुम

**भाई :** आग़ा जो चाहते हो तुम मुझसे
मैं समझता हूं वो इशारा तो
इस तरह कैसे झटसे हाँ कह दूं
मुझे करने दो इस्तिख़ारा[1] तो

*जब्बार जेब से तस्बीह निकाल के इस्तिख़ारा करते हैं। इस्तिख़ारा वाजिब आता है।*

**भाई :** आग़ा जब ये ख़ुदा को है मंज़ूर
सर झुकाने पे हम भी हैं मजबूर

1. किसी बात को करने से पहले ख़ुदा से इशारा चाहना

मैं तो एक रोज़ पहले आ पहुचा
आयेगा कल यहां मेरा बेटा
उसको सब कुछ बताना है बेकार
कि वो अब तक है शादी पर तैयार
तुमको तौफ़ीक़[1] दे अगर अल्लाह
क़ाज़ी बुलवा के कल पढ़ा दो निकाह

**कट**

*सौदागर का घर।*
*बाहरी हिस्सा।*
*एक बेवक़अत-सा लड़का सेहरा बांधे बैठा है। क़ाज़ी अमामा बांधे खड़े हैं।*
*सौदागर क़ाज़ी को ज़नानख़ाने में ले जाते हैं।*

**क़ाज़ी :** (सौदागर से) इसने तो सर झुका के हां कह दी
चलिए उसकी भी पूछ लें मर्ज़ी
*दोनों ज़नानख़ाने में जाते हैं।*
*सौदागर का घर।*
*महजबीं का कमरा। महजबीं दुल्हन बनी बैठी है लेकिन आंखों में आंसू भरे हैं। मां क़ाज़ी को देख के आंचल से मुंह ढांपती है और खड़ी हो जाती है।*

**क़ाज़ी :** महजबीं मुझको जानती हो तुम

**महजबीं :** आप क़ाज़ी है मानती हूं मैं
हैं ज़रा-सा खुदा से छोटे आप
राज़ की बात जानती हूं मैं
कहलवाते हैं आप हां ऐसे
फांसी देने से पेशतर जैसे
मर्ज़ी मुल्ज़िम से पूछी जाती है
आप उजरत[2] के कुछ टके लेकर
हर किसी का निकाह पढ़ते हैं

---

1 नेकी 2. काम के बदले में मिली मज़दूरी

आपके पूछने पे हां कह के
राज़ फांसी पे लोग चढ़ते हैं

**क़ाज़ी :** कितनी गुस्ताख़ हो ख़ुदा की पनाह
इश्क ने कर दिया तुम्हें गुमराह

**महजबीं :** आप गुमकर्दा राह[1] हैं क़ाज़ी
शुक्र है मेरा रहनुमा है इश्क़

**क़ाज़ी :** तू समझती भी है कि क्या है इश्क

**महजबीं :** ज़िंदगी दर्द है दवा है इश्क़

**क़ाज़ी :** इसको जो चख ले बावला हो जाय
ज़हर का जाम ज़हर का है इश्क़

**महजबीं :** मिलता है जो फलों में जन्नत के
वही लज़्ज़त वही मज़ा है इश्क़

**क़ाज़ी :** इश्क़ ने तुझको इतना बहकाया
आज शैताँ का तुमपे है साया

**महजबीं :** मुझ पे इस वक़्त साया आपका है

**काज़ी :** मुझपे अहसान तेरे बाप का है
होती गर कोई दूसरी लड़की
उससे होता न हमकलाम कभी
तुझको समझाऊं कैसे ऐ गुमराह
अपने मज़हब में आशिक़ी है गुनाह

**महजबीं :** क़ाज़ी जो भी हो आपका मज़हब
इश्क़ को उससे क्या भला मतलब
इश्क़ तो आप एक मज़हब है
सिर्फ़ मज़हब नहीं ख़ुदा है इश्क

**क़ाज़ी :** तू तो कमबख़्त कुफ़्र बकने लगी
खींच ली जायेगी ज़बाँ तेरी

**महजबीं :** सच से नफ़रत तुम्हें है गर इतनी
तुम ज़बां खींच लो मेरी क़ाज़ी.

**क़ाज़ी :** दूल्हा आया है जो बनारस से

---

1. मार्ग भटकाने वाला

पढ़ दूं खुत्बा[1] अभी जो हां कह दो

**महजबीं :** हो तुम्हारे अगर कोई लड़की
इससे उसका निकाह पढ़ दो अभी
*मां घबराई हुई आती है।*

**मां :** क़ाज़ी इतनी हुई जो देर यहां
बातें बनने लगीं हज़ार वहां
ऐसी हालत में जानते हैं आप
लौट जाती है दर से भी बारात
डूब जाती हैं अश्कों आहों में
प्यार की सुबहें वस्ल[2] की रातें
महजबीं जानती है क्या आखि़र
कि वो सारे जहां में रुस्वाई
शुक्र कर शुक्र कर खुदा का शुक्र
वक़्त पर आ गये मेरे भाई
और हर बात जान के सुनके
अब भी इस बात पर वो हैं तैयार
ओढ़ लें वो तमाम बदनामी
उनके बेटे से हो तेरी शादी

**महजबीं :** हो रहा है जो मुझ पे इतना जब्र
क्या ये जायज़ है क़ाज़ी जी सोचो
मुझे इक़रार है न है इनकार
मुझको बस थोड़ी देर सोचने दो
*क़ाज़ी माँ की तरफ़ देखता है।*

**मां :** अभी चलिए मैं फिर बुलाऊंगी
इसे कुछ देर में मना लूंगी

**कट**

---

1. धर्मोपदेश, धार्मिक वक्तव्य 2. मिलन

*सौदागर का घर*
*बाहरी हिस्सा।*
*दूल्हा और उसका बाप जब्बार सब परेशान और क़ाज़ी के मुंतज़िर है। क़ाज़ी आता है।*

**क़ाज़ी :** इसे इक़रार है न है इनकार
हाँ कही और न 'ना' कही इसने
अभी लड़की बहुत परीशां है
होके मजबूर हां कहे भी अगर
ऐसी हां खुद ख़िलाफ़े-ईमां है
धुन की पक्की ज़रूर है लड़की
न वो बदकार है न वो गुमराह
आज की रात सोचने दो इसे
सुबह हां सुनके मैं पढ़ूंगा निकाह

**कट**

*सौदागर का घर।*
*महजबीं का कमरा। महजबीं के पास उसकी मां बैठी रो रही है।*

**मां :** मैं तेरे पांव पड़ती हूं बेटी
रख ले तू आज आबरू घर की
दूल्हा अनपढ़ सही गंवार सही
और तुझे दूसरे से प्यार सही
बाप तेरा गया था खुद बेटी
कि हो नव्वाब मिर्ज़ा से शादी
बाप को तेरे ख़ूब करके ज़लील
किया हैदर अली ने साफ़ इनकार
और हम लोग हो गये लाचार
मुर्शिदाबाद वाले ही इक दिन
आके इस दर पे गिड़गिड़ाये थे

तेरी उंगली में जो अंगूठी है
ये अंगूठी वही तो लाये थे
जाने क्या सुनके रिश्ता तोड़ दिया
तुझको बदनाम करके छोड़ दिया

**महजबीं :** अम्मां एक बात मान लो लिल्लाह
मुझको जाने दो आज तुम दरगाह
वादा करती हूं आपसे अम्मां
खुल के क़ाज़ी से कल कहूंगी हां

**नवाब मिर्ज़ा की आवाज़ :** रही कुछ रोज़ तो यही ताज़ीर
फिर मुआफ़िक़ हुई मेरी तक़दीर
हुए इस गुल से वस्ल के इक़रार
उठ गया दरम्यां से सब्रो-क़रार
जो लिखा था अदा किया उसने
वादा एक दिन वफ़ा किया उसने
रात फिर मेरे घर में रहके गयी
बात इस दिन की याद रखियेगा
प्यार करती थी वो जो ग़ैरते हूर
रक्खा मिलने का उसने ये दस्तूर
पंजशुम्बा[1] को जाती भी दरगाह
वाँ से आती थी मेरे घर वो माह

**कट**

*आम का बाग़।*
*सलाम और नवाब मिर्ज़ा दोनों बंगले के बाहर बेचैन से नज़र आते हैं।*

**नवाब मिर्ज़ा :** आंख मेरी फड़क रही है सलाम
शायद आये किसी का आज पयाम

**सलाम :** आज नौचंदी भी है मेरे हुज़ूर

---

1 जुमेरात

डोली आय नहीं य अक्ल स दूर

**नवाब मिर्ज़ा :** दो महीने से वो नहीं आई
ख़त भी तो मेंहदी नहीं लाई
उसने शायद भुला दिया मुझको
या नज़र से गिरा दिया मुझको

**सलाम :** इतने मायूस क्यूं हैं आप हुजूर
मानिये मेरी आयेगी वो ज़रूर

**सलाम :** (खुश होकर) मैं न कहता था देखिए सरकार
वही डोली है और वही है कहार

**नवाब मिर्ज़ा :** (खुश होकर) और तेरी मेंहदी भी है आई साथ

**सलाम :** मेरी क़िस्मत भी जागी आज की रात
*कहार डोली बंगले के फाटक में रखते हैं। मेंहदी पर्दा उठाती है। महज़बी रोती हुई डोली से निकलती है।*

**महजबीं :** अक़्बा[1] मेरे हो गये आगाह
तुमसे मिलने की अब नहीं कोई राह
मशविरे हो रहे हैं आपस में
भेजते हैं मुझे बनारस में
वो छुटे हमसे जिसको प्यार करें
जब्र क्यूं कर ये इख़्तियार करें
गो ठिकाने नहीं है होशो-हवास
पर मैं कहने को आई हूं तेरे पास
जाए-इबरत सराय फ़ानी है
मूरिद-ए-मर्ग नौजवानी है
ऊंचे-ऊंचे मकान थे जिनके
आज वो तंग गौर[2] में हैं पड़े
कल जहां पर शगूफ़ा ओ गुल थे
आज देखा था ख़ार बिल्कुल थे
जिस चमन में था बुलबुलों का हुजूम
आज उस जा[3] है आशियाना-ए- बूम[4]

---

1. परिवारजन 2. क़ब्र 3. जगह 4. उल्लू

बात कल की ह नोजवा थे जा
साहब-नाबत-ए-निशा थे जो
आज ख़ुद हैं न है मकां बाक़ी
नाम को भी नहीं निशां बाक़ी
ग़ैरते-हूर महजबीं न रहे
हैं मकां गर तो वो मकीं[1] न रहे
जो कि थे बादशाहे-हफ़्त अक्लीम[2]
हुए जा-जा के ज़ेरे-ख़ाक मुक़ीम
कोई ऐसा भी अब नहीं है नाम
कौन-सी गौर में गया बहराम
अब न रुस्तम, न साम बाक़ी है
इक फ़क़त नाम ही नाम बाक़ी है
कल जो थे रखते थे अपने फ़र्क़[3] पे ताज
आज हैं फ़ातिहा को वो मुहताज
थे जो ख़ुदसर जहान में मशहूर
ख़ाक में मिल गया सब उनका ग़ुरूर
इत्र मिट्टी का जो न मलते थे
न कभी धूप में निकलते थे
गर्दिश-ए-चर्ख़[4] से हलाक़ हुए
उस्तख़्वाँ[5] तक भी उनके ख़ाक हुए
थे जो मशहूर कैसर-ओ-फ़ग़फ़ूर[6]
बाक़ी उनका नहीं निशान-ए-क़ुबुल[7]
ताज में जिनके टकते थे गौहर
ठोकरें खाते हैं वो कासा-ए-सर[8]
रश्क-ए-यूसूफ़[9] थे जो जहां में हसीं
खा गये उनको आसमानों-जमीं
हर घड़ी मन्क़लब[10] ज़माना है

---

मे रहने वाला 2. कुल दुनिया का बादशाह 3. सर 4. आकाश का चक्कर हड्डियाँ 6. रूम और चीन के बादशाह 7. क़ब्रों के निशान. 8. सिर रूपी हजरत यूसुफ़ की सुंदरता से होड़ 10. उल्टा औंधा

यही दुनिया का कारख़ाना है
है न शीरी न कोहकन का पता
न किसी जा है नल-दमन का पता
बू-ए-उल्फ़त तमाम फैली है
बाक़ी अब कैस है न लैली है
सुब्ह को ताइरान-ए-ख़ुश-उल-हान[1]
पढ़ते हैं 'कुल मन अलेहाफ़ान'[2]
मौत से किसको उस्तगारी है
आज वो कल हमारी बारी है
ज़िंदगी बेसबात है इसमें
मौत ऐन-ए-हयात है इसमें
हम भी गर जान दे दें खाकर सम
तुम न रोना हमारे सर की क़सम
दिल को हमजोलियों में बहलाना
या मिरी क़ब्र पे चले आना
जाके रहना न इस मकान से दूर
हम जो मर जायें तेरी जान से दूर
रूह भटकेगी गर न पायेगी
ढूढ़ने किस तरफ़ को जायेगी
रोके रहना बहुत तबीयत को
याद रखना मेरी वसीयत को
ज़ब्त करना अगर मलाल रहे
मेरी रुस्वाई का ख़याल रहे
मेरे मरने की जब खबर पाना
यूं न दौड़े हुए चले आना
जमा हो लें सब अक़्रबा[3] जिस दम
रखना उस वक़्त तुम वहां पे कदम
कहे देती हूं जी न खोना तुम
साथ ताबूत के न होना तुम

1. मधुर कंठ वाले पक्षी 2. संसार की हर चीज़ नश्वर है 3. स्व

हो गये तुम अगरचे सौदाइ
दूर पहुंचेगी मेरी रुस्वाई
लाख तुम कुछ कहो न मानेंगे
लोग आशिक़ हमारा जानेंगे
तानाज़न[1] होंगे सब ग़रीब-अमीर
क़ब्र पर बैठना न होके फ़क़ीर
सामना हो हज़ार इज़्ज़त का
जब जनाज़ा मेरा अज़ीज़ उठायें
आप बैठे वहां न अश्क बहायें
मेरी मिन्नत पे ध्यान रखिएगा
बंद अपनी ज़बान रखिएगा
तज़्किरा कुछ न कीजिएगा मिरा
नाम मुंह से न लीजिएगा मिरा
अश्क आंखों से मत बहाहिएगा
साथ ग़ैरों की तरह जाइएगा
आप कंधा न दीजिएगा मुझे
सब में रुस्वा न कीजिएगा मुझे
रंग रुख़ का बदल न जाये कहीं
मुंह से नाला निकल न जाये कहीं
साथ चलना न सर के बाल खुले
ता किसी शख़्स पर न हाल खुले
होते आफ़त के हैं ये परकाले[2]
ताड़ लेते हैं ताड़ने वाले
हो बयां गर किसी जगह मिरा हाल
तुम न करना कुछ इस तरफ़ को ख़्याल
ज़िक्र सुनकर मिरा न रो देना
मेरी इज़्ज़त न यूं डुबो देना
रंजे-फ़ुर्क़त[3] मिरा उठा लेना
जी किसी और जा लगा लेना

---

1 उलाहना देने वाले 2. चिनगारियां 3. बिछोह का दुःख

होगा कुछ मेरी याद से न हुसूल[1]
दिल को कर लेना और से मशगूल
रंज करना न मेरा मैं क़ुर्बान
सुन लो गर अपनी जान है तो जहान
दिल से कुढ़ना न मुझसे छूट के तू
जान देना न घूंट-घूंट के तू
आके रो लेना मेरी क़ब्र के पास
ता निकल जाये तेरे दिल की भड़ास
आंसू चुपके-से दो बहा देना
क़ब्र मेरी गले लगा लेना
अगर आ जाये कुछ तबीयत पर
पढ़ना क़ुर्आन मेरी तुरबत[2] पर
गुंचा-ए दिल मेरा खिला जाना
फूल तुरबत पे दो चढ़ा जाना
रोके करना न अपना हाल ज़बूं[3]
यूं न हो जाये दुश्मनों को जुनूं
देखिए किस तरह पढ़ेगी कल
सख़्त होती है मंज़िले-अव्वल
मेरे मर्क़द[4] पे रोज़ आना तुम
फ़ातिहा से न हाथ उठाना तुम
है ये हासिल सब इनती बातों से
मिट्टी देना तुम अपने हाथों से
उम्र भर कौन किसको रोता है
कौन साहब किसी का होता है
कभी आ जाये गर हमारा ध्यान
जानना हम पे हो गई क़ुर्बान
दिल पे कुछ आने दीजिओ न मलाल
ख़्वाब देखा था कीजिओ न ख़याल
रंज-ओ-राहत जहां में दायम है

---

1. प्राप्त 2. क़ब्र 3. बुरा हाल 4. क़ब्र

कभी शादी है तो कभी ग़म है
है किसी जा पे जश्ने-शाम-ओ-पगाह[1]
है किसी जा सदा-ए-नाला ओ-आह
फिर मुलाक़ात देखें हो कि न हो
आज दिल खोल कर गले मिल लो
हम को ख़ूब आज देख-भाल लो तुम
दिल की सब हसरतें निकाल लो तुम
आओ अच्छी तरह से कर लो प्यार
कि निकल जाये कुछ तो दिल का बुख़ार
दिल में बाक़ी रहे न कुछ अरमान
ख़ूब मिल लो गले से मैं क़ुर्बान
हश्र तक होगी फिर ये बात कहां
हम कहां तुम कहां ये रात कहां
कह लो सुन लो जो कुछ भी जी में आये
फिर ख़ुदा जाने क्या नसीब दिखाये
दिल को अपने करो मलूल[2] नहीं
रोने-धोने से कुछ हुसूल नहीं
हमको है-है करे जो अश्क बहाये
हमको गाढ़े जो अपने दिल को कुढ़ाये
उम्र तुमको तो है अभी खेना
दिन बहुत से पड़े हैं रो लेना
बाहें दोनों गले में डाल लो आज
जो-जो अरमान हो निकाल लो आज
फिर ख़ुदा जाने क्या मशय्यत[3] है
इतनी सुहबत बहुत ग़नीमत है
किसको कल बैठ के करोगे प्यार
किसकी लोगे बलायें तुम हर बार
कल गले से किसे लगाओगे
किसको यूं गोद में बिठाओगे

---

1. सुबह 2. दुःखी, शोकाकुल 3. मर्ज़ी, क़िस्मत

हाल किसको सुनायेगी आकर
किसकी मामां बुलायेगी आकर
हम तो उठते हैं इस मकां से कल
अब तो जाते हैं इस जहां से कल
हो चुका आज जो कि था होना
कल बसायेंगे क़ब्र का कोना
ख़ाक में मिलती है ये सूरते-ऐश
फिर कहां हम कहां ये सुहबते-ऐश
देख लो आज हमको जी भर के
कोई आती नहीं है फिर मरके
ख़त्म होती है ज़िंदगानी आज
ख़ाक में मिलती है जवानी आज
चुप रहो क्यूं अबस[1] भी रोते हो
मुफ़्त काहे को जान खोते हो
समझो इस शब को शब बरात की रात
हम हैं मेहमां तुम्हारे रात की रात
चैन दिल को न आयेगा तुझ बिन
अब के बिछड़े मिलेंगे हश्र के दिन
अब तो इतनी दुआ करो मिरी जान
कल की मुश्किल ख़ुदा करे आसान
फल उठाया न ज़िंदगानी का
न मिला कुछ मज़ा जवानी का
दिल में लेकर तुम्हारी याद चले
बाग़े-आलम[2] से नामुराद चले
कहती है बार-बार हिम्मते-इश्क़
है यही मक़्तज़ा[3]-ए-इज़्ज़त-ए-इश्क़
चारपाई पे कौन पड़ के मरे
कौन यूं एड़ियां रगड़ के मरे
इश्क़ का नाम क्यूं डुबो जायें

---

1. बेफ़ायदा, बेकार 2. संसार रूपी उपवन 3. मुताबिक़, अनुरूप

आज ही जान क्यू न खो जायें
जब तलक चर्ख़े-बेमदार[1] रहे
ये फ़साना भी यादगार रहे
बोली घबरा के फिर ठहर मिरी जान
कुछ सुना भी कि क्या हुआ इस आन
हसरते-दिल निगोड़ी बाक़ी है
और यहां रात थोड़ी बाक़ी है
गोद में अपनी फिर बिठा लो जान
फिर गले से हमें लगा लो जान
डाल दो फिर गले में हाथों को
फिर गिलोरी चबा के मुंह में दो
फिर कहां हम कहां ये सुहबत-ए-यार
कर लो फिर हम को भींच-भींच के प्यार
फिर मिरे सिर पे रख दो सर अपना
गाल फिर रख दो गाल पर अपना
फिर उसी तरह मुंह से मुंह को मलो
फिर वही बातें प्यार की कर लो
लहर फिर चढ़ रही है कालों की
बू सुंघा दो तुम अपने बालों की
फिर हम उठने लगे बिठा लो तुम
फिर बिगड़ जायें हम मना लो तुम
फिर लबों को चबा के बात करो
फिर ज़रा मुस्कुरा के बात करो
फिर बलाएं तुम्हारी यार लें हम
आओ फिर सर से सर उतार लें हम
आप अच्छे-भले बिछड़ जायें
और लेने के देने पड़ जायें
काट ले कोई धड़ से सर मेरा
बाल बीका न हो मगर तेरा

---

मैं दिलो जां से हूं फ़िदा तेरी
लेके मर जाऊं मैं बला तेरी
अब तू क्यूं ठंडी सांसें भरता है
क्यूं मेरे दिल के टुकड़े करता है
मैं अभी तो नहीं गई हूं मर
क्यूं सुजाई हैं आंखें रो-रो कर
इस क़दर हो रहा है क्यूं ग़मनीं
क्यूं मिटाता है अपनी जान-ए-हज़ी[1]
कर न रो-रो के अपना हाल-ए-ज़बूं[2]
अरे ज़ालिम अभी तो जीती हूं
अश्क होते हैं नागवार तेरे
तू न रो हो गई निसार तेरे
यूं तो आंसू न तू बहा अपने
दिल को मज़बूत रख ज़रा अपने
रंज से मेरे कुछ उदास न हो
यूं तो लिल्लाह बदहवास न हो
तुम तो अपने में हो गये रंजूर[3]
थक गये और अभी है मंज़िल दूर
इसी ग़म ने तो मुझको मारा है
सदमा तेरा नहीं गवारा है
अपने मरने का कुछ नहीं है अलम[4]
दिल मे मेरे फ़क़त है तेरा ग़म
जान हमने तो इस तरह खोई
कौन तेरी करेगा दिलजोई
आके समझाएगा बुझाएगा कौन
इस तरह से गले लगाएगा कौन
पर मैं अब इसको क्या करूं कमबख़्त
आसमां दूर है ज़मीं है सख़्त

---

1. रंजीदा, ग़मग़ीन जान 2 बुरा हाल, विपदा 3. उदास, बीमार, 4

गो कि उक़्बा[1] में रूसियाह चली
मगर अपनी-सी में निबाह चली
जी को तुम पर फ़िदा किया मैंने
हक़ वफ़ा का अदा किया मैंने
रह गई दिल में अपने दिल की बात
नहीं मालूम अब है कितनी रात
जूं-जूं घड़ियाल वो बजाता है
जी मेरा सनसनाये जाता है।
यूं तो कोई न दर्दो-ग़म में कुढ़े
फूले जाते हैं हाथ-पांव मिरे
कुछ अजीब हो रहा है जान का तौर
कहती हूं कुछ निकलता है कुछ और
आंसू आंखों में भर-भर आते हैं
दस्त-ओ-पा सारे थरथराते हैं
दिल को समझाती हूं मैं बहुतेरा
पर समझता नहीं है जी मेरा
गो तू बैठा हुआ है पास मिरे
पर ठिकाने नहीं, हवास मिरे
होश आते हुए भी जाते हैं
दिल में क्या-क्या ख़याल आते हैं
पेश यूं फ़ुर्क़त-ए-हबीब[2] न हो
किसी दुश्मन को भी नसीब न हो
दूसरा अब ये और मातम है
सांग बाक़ी बहुत है शब कम है
ख़ाक तस्कीन जाने-ज़ार करें
अब वसीयत करें कि प्यार करें
बेहया ऐसी ज़िंदगी को सलाम
मुंह पे आये न थे कभी ये कलाम
ताने सुनती हूं दो महीने से

1. आखिरत, आक़्बत 2. प्रेमी से बिछोह

मौत बेहतर है ऐसे जीने से
ख़ून-ए-दिल कब तलक पिये कोई
बेहया बन के क्या जिये कोई
नोज इनसान बेहमय्यत हो
आदमी क्या न जिसमें ग़ैरत हो
तू सलामत जहां में रह मिटी जां
निकलें मां-बाप के तेरे अरमां
वास्ते मेरे अपना दिल न कुढ़ा
चांद-सी बन्नो घर में ब्याह के ला
है यही लुत्फ़ ज़िंदगानी का
देख सुख अपनी नौजवानी का
चार दिन है ये नाला[1]-ओ-फ़रियाद
उम्र भर कौन किसको करता है याद
लुत्फ़ दुनिया का जब उठाओगे
हमको दो दिन में भूल जाओगे

कह के ये फिर चिमट गई इक बार
और किया ख़ूब भींच-भींच के प्यार

---

1. आर्त्त पुकार

## मस्नवी ज़हर-ए-इश्क़

जान-ए-आलम का लखनऊ देखो
एक फ़िरदौस[1] रंग-ओ-बू देखो

जन्नत आदम ने छोड़ी जिसके लिए
है ये वो शहरे-ए-आरज़ू देखो

हर गली इसकी जैसे मयख़ाना
रक्स[2] में साग़र-ओ-सबू[3] देखो

रात ज़ुल्फ़ों की सुबह मुखड़ों की
यही दिनरात चार सू[4] देखो

गर्म है हुस्न-ओ-इश्क़ का बाज़ार
दिल का सौदा है कू-ब-कू[5] देखो

गुडिया गुड्डे का ब्याह होता है
दिल-ए-इन्सां लहू-लहू देखो

---

2 नृत्य 3. जाम और सुराही 4. ओर, दिशा 5. गली-गली

इश्क़ को लोग जानते है गुनाह
लुट गई दिल की आबरू देखो

रूह के ज़ख़्म गहरे-गहरे हैं
दिल की धड़कन पे सख़्त पहरे हैं

इस शराफ़त को दूर ही से सलाम
जिसमें हो आशिक़ी का ये अंजाम

**कट**

स्टेज पर मुकम्मल अंधेरा है। नेपथ्य में स्त्री की आवाज़ में एक शोक धुन बज रही है। ये धुन मनस्वी की आम धुन हो तो बेहतर है।

स्टेज पर एक क़ब्र नुमायां होती है। क़ब्र पर फूलों की चादर ओढ़ाई होती है। सरहाने लोबान सुलग रहा है। क़ब्र के पास ग़म से चूर-चूर एक जवान बैठा फ़ातिहा पढ़ रहा है। उसकी मुट्ठी में कुछ फूल हैं जिनको बेख़याली में वह मसल रहा है। स्टेज पर कुछ रौशनी देख के फूल क़ब्र की तरफ फेंक देता है और धीरे-धीरे स्टेज पर रौशनी के दायरे में आकर खड़ा हो जाता है और प्रतिरोधी अंदाज़ में कुछ शे'र गुनगुनाता या पढ़ता है।

इश्क़ से कौन है बशर ख़ाली
कर दिये जिसने घर के घर ख़ाली
पड़ते हैं इसमें जान के लाले

डालता है जिगर में ये छाल
जो कि वाक़िफ़ थे सब क़रीनों से
ख़ाक छनवाई उन हसीनों से
मुंह से करने न दी फ़ुग़ां[1] इसने
मारे चुन-चुन के नौजवां इसने
इसने जिससे ज़रा तपाक किया
सबसे पहले उसे हलाक किया
आतिश-ए-हिज्र[2] से जलाता है
आग पानी में ये लगाता है
मार डाला तमाशबीनों को
ज़हर खिलवा दिया हसीनों को
बस में डाले न किबरिया[3] इसके
रहम दिल में नहीं ज़रा इसके

नवाब मिर्ज़ा फूलों को मसल कर क़ब्र की तरफ़ फेंक देते और सर से पांव तक आंख बन के क़ब्र को देखने लगते हैं कि पर्दे के पीछे एक साहब अस्सी की उम्र निकलते, और चुपके से नवाब मिर्ज़ा के कंधे पर हाथ रख देते है।

**नवाब मिर्ज़ा :** (चौंक कर) उनकी तरफ़ देखते और कहते हैं, "हादी भाई!"

**हादी :** दिल की बेताबी मुझको ले आई, चलिए नवाब मिर्ज़ा, चलिए।

**नवाब मिर्ज़ा :** कहाँ?

**हादी :** आम के बाग में बंगला है जहाँ।

**नवाब मिर्जा :** जिसके दरवाज़े बंद रहते हैं
जिसको सब भूत बंगला कहते हैं?

---

1. दु:ख भरी पुकार 2. वियोग की अग्नि 3. ख़ुदा

**कट**

**हादी :** भूतों-वूतों का मैं नहीं क़ायल
वहम होता है होश का क़ातिल
*यह कहते हुए हादी, मिर्ज़ा को हल्के से धक्का देते हुए दोनों अंधेरे में ग़ायब हो जाते हैं।*

**कट**

*स्टेज पर पेड़ों और बेलों वग़ैरह से बाग़ का दृश्य रचा गया है। इसी बाग़ में एक बंगला था जिसका सिर्फ़ एक फाटक नज़र आ रहा है। फाटक में दोनों खड़े हैं।*

**हादी :** चलिए अंदर!
**नवाब मिर्ज़ा :** इसकी भी इक अजब कहानी है
क़ैद इसमें मिरी जवानी है।
खुल न जायें ढँकी छुपी बातें
बंद हैं इसमें वस्ल[1] की रातें
इसमें बीता है अपना रंगीं कल
हम दिवानों का है ये ताजमहल
रात को जब ज़माना सोता है
जाने कौन इसमें आके रोता है
चांदनी जब भी खेत करती है
कोई डोली यहां उतरती है
और रोता कोई उतरता है
रोज़ ये वाक़िआ गुज़रता है
आपकी ज़िद थी जो चला आया
दिल मगर हर क़दम पे घबराया
**हादी :** कफ़-ए-अफ़सोस यूं न मलिये हाथ

---

1. मिलन

हुस्न-ए-यूसुफ़ फ़क़त कहानी था
उस सन-ओ-साल पर कमाल ख़लीक़[1]
चाल-ढाल इंतिहा कि निस्तालीक़[2]
चश्मे बददूर वो हसीं आंखें
था जो मां-बाप को नज़र का डर
आंख भरके न देखते थे उधर
थी ज़माने में बेअदील-ओ-नज़ीर[3]
ख़ुशगुलू[4] ख़ुशजमाल[5] ख़ुश तक़रीर[6]
था न उस शहर में जवाब उसका
हुस्न लाखों में इंतिख़ाब उसका
शे'र गोई से ज़ौक़[7] रहता था
लिखने-पढ़ने का शौक़ रहता था
था ये उस गुल का जामाज़ेब बदन
सादी पोशाक भी थे सौ जोबन
नूर आंखों का दिल का चैन थी वो
राहत-ए-जान-ए-वालिदैन[8] थी वो

कट

*बंगला।*

*नवाब मिर्ज़ा और हादी उसी पोज़ीशन में खड़े हैं।*

**हादी (कहते हैं) :** आप कर लेते उससे गर शादी
दिल की होती न ऐसी बर्बादी

**नवाब मिर्ज़ा :** दो दिलों की वो सुनते क्या धड़कन
हो चुकी थी बुज़ुर्गों में अनबन

**हादी :** आपके वालिद और सौदागर कभी आपस में मिलते थे?

**नवाब मिर्ज़ा :** अक्सर।

---

1. स्रष्टा, 2. फ़ारसी की एक लिपि जो सीधी होती है 3. अद्वितीय 4. मधुर कंठ वाली 5. सुंदर 6. अच्छी वक्ता 7. रुचि 8. मां-बाप

**नवाब मिर्ज़ा :** एक दिन चर्ख़[1] पर जो अब्र[2] आया
कुछ अंधेरा-सा हर तरफ़ छाया
खुल गया जब बरस के वो बादल
कौस[3] तब आसमां पे आई निकल
दिल मिरा बैठे-बैठे घबराया
सैर करने को बाम पर आया
ख़फ़्कां[4] दिल का था जो बहलने लगा
इस तरफ़ उस तरफ़ टहलने लगा
देखा इक सिम्त जो उठा के नज़र
सामने थी वो दुख़्त[5]-ए-सौदागर
साथ हमजोलियां भी थीं दो-चार
देखती थीं वो आसमां की बहार
बाम से कुछ उतरती जाती थीं
चुहलें आपस में करती जाती थीं
रह गई जब अकेली वो गुलरू
निगरां सैर की हुई हर सू[6]
हुई मेरी जो उसकी चार निगाह
मुंह से बेस्साख़्ता निकल गई आह
हाल दिल का कहा नहीं जाता
ख़ूब संभला नहीं ग़श आ जाता
न हुआ जो कलाम फ़ीमाबीन[7]
रूह क़ालिब में हो गई बेचैन
तीर-ए-उल्फ़त जो था लगा कारी
अश्क बेसाख़्ता हुआ जारी
सामने वो खड़ी थी माह-ए-मुनीर[8]
चुप खड़ा था मैं सूरत-ए-तस्वीर
ताब-ए-नज़्ज़ारा[9] उतनी ला न सका

---

1. आकांक्षा 2. बादल 3. इंद्रधनुष 4. भय, बेचैनी 5. बेटी 6. दिशा 7. बीच 8 चांद 9. देखने की शक्ति

कि इशारे से भी बुला न सका
देखता उसको बार-बार था मैं
महव-ए-हुस्न-ओ-जमालबार[1] था मैं
गो मैं रोके हुए हज़ार रहा
दिल पे लेकिन न इख़्तियार रहा
इसी सूरत से हो गई जब शाम
लाई पास उसके एक कनीज़[2] पयाम
बैठी नाहक़ में हौले खाती हैं
अम्मां जान आपको बुलाती हैं
गैसू रुख़ पर हवा से हिलते हैं
चलिए अब दोनों वक़्त मिलते हैं
सुन के लौंडी के मुंह से ये पयाम
गई कोठे के नीचे वो गुलफ़ाम
उसका जल्वा न जब नज़र आया
मैं भी रोता हुआ उतर आया
शाम से फिर सहर की मर मर के
शब वो काटी ख़ुदा ख़ुदा करके
पड़ गया ग़म से दिल में इक नासूर
यही उस दिन से हो गया दस्तूर
दिन में सौ बार बाम पर जाना
देखना भालना चले आना
जब न देखा वहां पे वो गुलरू
फ़र्त-ए-ग़म[3] से निकल गये आंसू
लाख चाहा न हो सका दिल सख़्त
पए-तस्कीं[4] रही ये आमद-ओ-रफ़्त
गुज़रे कुछ दिन तो रंज के मारे
ज़र्द रुख़सार[5] हो गये सारे
हो गई फिर वो ऐसी हालत-ए-ज़ार

---

1. सौंदर्य में डूबा हुआ 2. दासी 3. दुख की अधिकता 4. सांत्वना हे

जैसे बरसों का हो कोई बीमार
दिल को थी ग़म से ख़ुदफ़रामोशी
लग गई लब पे मुहर-ए-ख़ामोशी
न रहा दिल को ज़ब्त का बारा
सर जहां चाहा धड़ से दे मारा
रंज लाखों तरह के सहते थे
लब थे ख़ामोश अश्क बहते थे
हिज्र से ग़ैर हो गई हालत
ग़म से बिल्कुल बदल गई सूरत
हुआ हैरान अपना बेगाना
जिसने देखा मुझे न पहचाना
देखे मां-बाप ने जो ये अंदाज़
रूह क़ालिब[1] से कर गई पर्वाज़[2]
पूछा मुझसे ये क्या है हाल तिरा
किस तरफ़ है बंधा ख़याल तिरा
सच बता दे कि ध्यान किसका है
दिल में ग़म मेरी जान किसका है
रज किस शोलारू का खाते हो
शम्अ की तरह पिघलते जाते हो
जर्द चेहरा है अर्ग़वां[3] की तरह
टुकड़े पोशाक है कतां[4] की तरह
कौन से माहरू पे मरते हो
सच बता किसको प्यार करते हो
ये कहो महजबीं मिला है कौन
तुमको ऐसा हंसीं मिला है कौन
नहीं मालूम कौन है वो छिनाल
कर दिया मेरे लाल का ये हाल
मेरे बच्चे की जो कुढ़ाये जान

डान 3. एक क़िस्म का फूल 4. एक क़िस्म का बारीक कपड़ा

सात बार उसको में करू कुर्बान
अल्लाह आमीं[1] से हम तो यूं पाले
आप आफ़त में जां को यूं डाले

तेरे पीछे की तल्ख़ सब औक़ात
दिन को दिन समझी और न रात को रात
पाला किस किस तरह तुम्हें जानी
कौन मिन्नत थी जो नहीं मानी
रौशनी मस्जिदों में करती थी
जाके दरगाह चौकी भरती थी
अब जो नाम-ए-ख़ुदा जवान हुए
ऐसे मुख़्तार मेरी जान हुए
हां मियां सच है ये ख़ुदा की शान
तुम करो जान बूझकर हल्कान
हम तो यूं फूंक-फूंक रक्खें क़दम
आप देते फिरें हरेक पे दम
हम यहां रंज-ओ-ग़म में रोते हैं
आप ग़ैरों पे जान खोते हैं
यूं मिटाओगे जान कर हमको
थी न इस रोज़ की ख़बर हमको
देखती हूं जो तेरा हाल-ए-ज़बूं[2]
ख़ुश्क होता है मेरे जिस्म का ख़ूं
यूं भी बर्बाद तू शबाब न कर
मिट्टी मां-बाप की ख़राब न कर
कुछ तो कह हमसे अपने क़ल्ब[3] का हाल
किसका भाया है तुझको हुस्नो-जमाल
दिल हुआ तेरा शेफ़्ता[4] किसका
सच बता है फ़रेफ़्ता[5] किसका
कैसा दो दिन में जी निढाल हुआ

---

1. दुआएं माग-मांग कर पालना 2. चिंतनीय दशा 3. मन 4. आसक्त 5

दाइ बदी का क्या य हाल हुआ

आईना तो उठा के देख ज़रा
सुत गया दो ही दिन में मुंह कैसा
सुध न खाने की है न पीने की
कौन-सी फिर उमीद जीने की
किसकी उल्फ़त में है ये हाल किया
कुछ न मां-बाप का ख़याल किया
दिल पे गुज़रा है क्या मलाल तो कह
मुह से नाशुदनी अपना हाल तो कह
यू ही गर हो गया तू सौदाई
दूर पहुंचेगी उसकी रुस्वाई
ऐसे दीवाने को भरेगा कौन
शादी और ब्याह फिर करेगा कौन
कर दिया किसने ऐसा आवारा
कि नहीं बनता है अब कोई चारा
आगे तो ये न था तिरा दस्तूर
किससे सीखे हैं इस तरह के उमूर[1]
मेरे तो देख के गये औसान
लैला मजनूं के तूने काटे कान
बातें ये वालिदैन की सुनकर
और एक क़ल्ब पर लगा नश्तर
शर्म के मारे मुंह को ढांप लिया
कुछ न मां-बाप को जवाब दिया
गुज़रा याँ तक तो ये हमारा हाल
अब बयां उनका होता है अहवाल
मै तो खाये हुए था इश्क़ का तीर
पर हुई उनके दिल पे भी तासीर
छलके आंखों के दोनों पैमाने

दिल लगा अप ही आप घबराने
आतिश-ए-इश्क़ से जो उट्ठा धुआँ
बातों-बातों में बढ़ गया ख़फ्क़ाँ
गोश फ़रयाद क़ल्ब सुनने लगे
ख़ुदबख़ुद हाथ पांव धुनने लगे
दर्द-ओ-ग़म दिल को आ गया जो पसद
सोना रातों को हो गया सौगंध
मौज-ए-उल्फ़त उसे डुबोने लगी
एक उलझन सी दिल को होने लगी
घटने ताक़त लगी जो रोज़-ब-रोज़
आतिश-ए-हिज्र[1] हो गई दिल सोज़
दाग़ जूं-जूं जिगर के जलते थे
अश्क गर्म आंख से निकलते थे
गर्म नाले[2] थे दिल में आह थी सर्द
दिल में होता था मीठा-मीठा दर्द
यूँ तड़पता था उसके सीने में दिल
जिस तरह लोटे ताइर-ए-बिस्मिल[3]
हो गई जब कमाल हालत-ए-ज़ार
शब को रहने लगा उसे भी बुख़ार
सच है किस तरह जी उदास न हो
कोई हमराज़ भी जो पास न हो
न रुका उसके रोके से दिल-ए-ज़ार
जी में बाक़ी रहा न सब्र-ओ क़रार
लिखने पढ़ने का था जो उसको ज़ौक़[4]
सोच कर दिल में लिखा इक ख़त-ए-शौक
भेजा मुझको वो बेनज़र नामा
डर से लिक्खा मगर न सरनामा
एक मामा ने आके चुपके से
ख़त दिया उसका हाथ में मेरे

1 दुःख की पुकार 2. वियोग की अग्नि 3. घायल पक्षी 4. रुचि

खोल कर मैंने जो उसे देखा
कुछ अजब दर्द से ये लिक्खा था
हो ये मा'लूम तुझको बाद-ए-सलाम
गम-ए-फ़ुर्क़त से दिल है बेआराम
अपने कोठे पे तू नहीं आता
दिल हमारा बहुत है घबराता
शक्ल दिखला दे किबरिया[1] के लिए
बाग पर आ ज़रा खुदा के लिए
उस मुहब्बत पे हो ख़ुदा की मार
जिसने यूं कर दिया मुझे लाचार
सारे उल्फ़त ने खो दिये औसान
वरना ये लिखती मैं ख़ुदा की शान
अब कोई इसमें क्या दलील करे
जिसको चाहे ख़ुदा ज़लील करे
पढ़के मैंने लिखा ये उसको जवाब
क्या लिखूं तुमको अपना हाल-ए-ख़राब
बन गई याँ तो जान पर मेरी
खूब ली आपने ख़बर मेरी
हिज्र[2] में मर के ज़िंदगानी की
अब भी पूछा तो मेहरबानी की
जब से देखा है आपका दीदार
दिल से जाता रहा है सब्र-ओ-क़रार
रोज़ तप से बुख़ार रहता है
सर पे इक जिन सवार रहता है
तेरे क़दमों की हूं क़सम खाता
होश दो-दो पहर नहीं आता
पूछता है जो कोई आकर हाल
और होता है मेरे दिल को मलाल
कहूं किस किस से इस कहानी को

---

आग लग जाय इस जवानी को
हो गई है कुछ ऐसी ताक़त ताक़[1]
उठ नहीं सकता बार-ए-रंज-ओ-फ़िराक़[2]
हिल के पानी पिया नहीं जाता
वरना हुक्म आपका बजा लाता
पाता ताक़त जो तालिब-ए-दीवार
बाम पर आता दिन में सौ-सौ बार
पहुँचा जिस वक़्त से तिरा मक्तूब[3]
ज़िंदगी का बंधा है कुछ उस्लूब[4]
रंज राहत से गर बदल जाये
क्या अजब है जो दिल संभल जाये
पेशक़दमी जो तुमने की मिरे साथ
इसमें ज़िल्लत की कौन सी है बात
नहीं कुछ इसमें आपका भी क़ुसूर
मेरी उल्फ़त का ये असर है हुज़ूर
इश्क़ का है असर मिरे वल्लाह
वरना तुम लिखतीं ये मआज़ल्लाह[5]
तुम तो वो लोग होते हो जल्लाद
नहीं सुनते कोई करे फ़रियाद
हो बला से किसी का हाल बुरा
कोई मर जावे तुमको क्या परवा
नहीं मुमकिन तुम्हारा बल जाये
दम भी आशिक़ का गर निकल जाये
अब ये लिखता हूं आपको मैं हुज़ूर
वस्ल की फ़िक्र चाहिए है ज़रूर
इसमें ग़फ़लत जो तूने की ऐ माह
हाल होगा मेरा कमाल तबाह
ग़ैर है हिज्र से मिरी हालत

1. विशेष, अलग, अद्वितीय 2. विछोह का बोझ 3. पत्र 4. शैली, ढंग 5. अल्लाह बच

ग़म उठाने की अब नहीं, ताक़त
दिल में आफ़त अजीब आई है
जान बच जाये तो .ख़ुदाई है
जान को किस घड़ी क़रार आया
ग़श ने फ़ुर्सत जो दी बुख़ार आया
तपिश-ए-दिल ने गर किया हुशियार
वहम आने लगे हज़ार-हज़ार
दिल की वहशत ने कुछ जो मारा जोश
वो भी जाते रहे जो आये होश
आशना दोस्त आ गये जो कभू
जिसने देखा निकल पड़े आंसू
झूठ समझें इसे हुज़ूर नहीं
जान जाती रहे तो दूर नहीं
मर गये हम तो रंज-ए-फ़ुर्क़त[1] से
पर ख़बर की न अपनी हालत से
अब जो भेजी ये आपने तहरीर
है ये लाज़िम की वो करूं तदबीर
सख़्तियां हिज्र की बदल जायें
दिल की सब हसरतें निकल जायें
दे के ख़त मैंने ये कहा उससे
जल्द इसका जवाब ला उससे
पहुंचा जब उस तलक मिरा मक्तूब
हस के बोली कि वाह वा क्या ख़ूब
फिर किया ये जवाब यों तहरीर
कुछ क़ज़ा तो नहीं है दामनगीर
ऐसी बातें थीं कब यहां मंज़ूर
था फ़क़त तेरा इम्तिहां मंज़ूर
ये तो लिक्खे थे सब हंसी के कलाम
वरना इन बातों से मुझे क्या काम

———

मस्नवी जहर-ए इश्क

मुझको एसी भी क्या तिरी परवा
बाम पर तू बला से आ कि न आ
बात थी ये कमाल अक़्ल से दूर
झूठ लिखने पे हो गये मग़रूर
तुम पे मैं मरती क्या क़यामत थी
क्या मेरे दुश्मनों की शामत थी
मेरी जानिब से ये गुमां क्या ख़ूब
झूठ जमजम से है बहुत मर्गूब[1]
ये न समझा कि माजरा क्या है
यूं ही कोई किसी पे लुटता है
काला दाना ज़रा उतरवा लो
राई लौन इस समझ पे कर डालो
तो जो मरते भी गर मेरे बदख़्वाह
यूं न लिखती कभी मआजल्लाह
जान पापोश से निकल जाती
पर तबीयत न यूं बदल जाती
ऐसी बातों में होना है बदनाम
फिर न लिखिएगा इस तरह के कलाम
रंज आ जाता है इसी कद[2] से
न बढ़े आदमी कभी हद से
क्या समझ कर लिखा था ये मज़्मूँ
अच्छी होती नहीं है इतनी टूँ[3]
जी में ठानी है क्या बताओ तो
ख़ानगी[4] कस्बी[5] कोई समझे हो
मालज़ादी नहीं यहां कोई
जो करे तुमसे गर्मियां कोई
देख तहरीर फ़ील[6] लाये आप
ख़ूब जल्दी मज़े में आये आप

---

1. पसंदीदा 2. ज़िद, आग्रह 3. शेख़ी, डींग 4. घरेलू औरत जो घर बैठे पश
6. हाथी

तालिब-ए-वस्ल[1] जो हुए हमसे
हैगा सादा मिज़ाज जम-जम से
रही कुछ रोज़ तो यही ताज़ीर
फिर मुआफ़िक़ हुई मेरी तक़दीर
हुए उस गुल से वस्ल के इक़रार
उठ गई दरम्याँ से सब तकरार
जो कहा था अदा किया उसने
वादा एक दिन वफ़ा किया उसने
रात-भर मेरे घर में रहके गई
सुबह के वक़्त फिर ये कह के गई
बात इस दम की याद रखिएगा
एक दिन ये मज़ा भी चखिएगा
बिगड़ेगी जब तो बन न आयेगी
आपके पीछे जान जायेगी
लो मिरी जान जाती हूं अब तो
याद रखिएगा मेरी सुहबत को
जो खुदा फिर मिलाएगा तुमसे
तो कहूंगी मैं हाल आ तुम से
सुनके मैंने दिया ये उसको जवाब
न करो दिल को इस क़दर बेताब
कहती तुम क्या हो ये ख़ुदा न करे
ये सितम होवे किबरिया न करे
उम्र भर हम वफ़ा न तोड़ेंगे
ज़िंदगी भर न मुंह को मोड़ेंगे
प्यार करती थी वो जो ग़ैरत-ए-हूर
रक्खा मिलने का उसने ये दस्तूर
पंजशुम्बा[2] को जाती थी दरगाह
वाँ से आती थी मेरे घर वो माह[3]
ऐश होने लगे मिरे उनके

1. मिलन का इच्छुक 2. जुमेरात 3. चंद्रमा, प्रेमिका

ग़ैर जलने लगे ये सुन-सुनके
इत्तिफ़ाक़ ऐसा फिर हुआ नागाह
दो महीने तलक न आई वो माह[1]
क़त्अ[2] सब हो गये पयाम-ओ-सलाम
न रही शक्ल-ए-राहत-ओ-आराम
तब्अ[3] को हो गई परीशानी
अक़्ल को भी अजीब हैरानी
दिल को तकलीफ़ थी ये हद से ज़्याद
दफ़अतन[4] पड़ गई ये क्या उफ़्ताद[5]
थी न मुझको यहां किसी से लाग
किसने इस तरह की लगाई आग
दिल में उसके ये किसने मल डाला
जो मिरे ऐश में ख़लल डाला
कुछ तो ऐसा हुआ है अफ़साना
जो यहाँ तक न हो सका आना
नहीं मालूम क्या पड़ी उफ़्ताद
जो फ़रामोश की हमारी याद
कौन ऐसा है जाये घर उसके
किसको भेजूं मकान पर उसके
क्यूं न बेज़ार हूँ मैं जीने से
नहीं देखा है दो महीने से
जान आंखों में खिंच के आई है
अब नहीं ताक़ते-जुदाई है
कर लिया हो सका जहां तक सब्र
अब कहो दिल करे कहाँ तक सब्र
दो महीने न देखे जब गुल को
चैन किस तरह आये बुलबुल को
रात किस तरह फिर गुज़ारी जाये

---

1. चंद्रमुखी 2. तोड़ना 3. तबीयत 4. अचानक 5. विपत्ति

किस तरह दिल की बेक़रारी जाये
तब्अ किस तरह फिर बदल जाये
जिस्म से रूह जब निकल जाये
आई नौचंदी इतने में नागाह
इस बहाने से आई वो दरगाह
बस कि मरती थी नाम पर मेरे
छुपके आई वहां से घर मेरे
थी न फ़ुर्सत जो अश्कबारी[1] से
उतरी रोती हुई सवारी से
फिर लिपटकर मेरे गले इक बार
हाल करने लगी वो यूं इज़हार
अक़्बा[2] मेरे हो गये आगाह
तुमसे मिलने की अब नहीं कोई राह
मशविरे ये हुए हैं आपस में
भेजते हैं मुझे बनारस में
वो छुटे हमसे जिसको प्यार करें
जब्र क्यूंकर ये अख़्तियार करें
जा-ए-इबरत[3] सराय, फ़ानी है
मूरिद-ए-मर्ग[4] नागहानी[5] है
ऊंचे-ऊंचे मकान थे जिनके
आज वो तंग गौर में हैं पड़े
कल जहाँ पर शगुफ़्ता-ओ-गुल थे
आज देखा तो ख़ार बिल्कुल थे
जिस चमन में था बुलबुलों का हुजूम
आज उस जा है आशियाना-ए बूम[6]
बात कल की है नौजवां थे जो
साहिब-ए-नौबत-ओ-निशां[7] थे जो
आज ख़ुद हैं न है मकां बाक़ी

---

सगे-संबंधी 3. सीख लेने की जगह, दुनिया 4. मृत्यु की जगह
दैवीय 6. उल्लू 7. नगाड़ों और पताकाओं का स्वामी

नाम को भी नहीं निशां बाक़ी
ग़ैरत-ए-हूर महजबीं[1] न रहे
है मकां गर तो वो मकीं[2] न रहे
जो कि थे बादशाह हफ़्त अक़्लीम[3]
हुए जा जा के ज़ेर-ए-ख़ाक मुक़ीम[4]
कोई लेता नहीं है उसका नाम
कौन सी गौर[5] में गया बहराम[6]
अब न रुस्तम न साम बाक़ी है
इक फ़क़त नाम ही नाम बाक़ी है
कल जो रखते थे अपने फ़र्क़[7] पे ताज
आज हैं फ़ातिहा को वो मुहताज
थे जो खुदसर जहान में मशहूर
ख़ाक में मिल गया सब उनका गुरूर
इत्र मिट्टी का जो न मलते थे
न किसी धूप में निकलते थे
गर्दिश-ए-चर्ख़[8] से हलाक हुए
उस्तख़्वां[9] तक भी उनके ख़ाक हुए
थे जो मशहूर क़ैसर-ओ-फ़ग़फ़ूर[10]
बाक़ी उनके नहीं निशान-ए-क़ुबूर[11]
ताज में जिनके टकते थे जौहर
ठोकरें खाते हैं वो कासा-ए-सर[12]
रश्क-ए-यूसुफ़ जो थे जहां में हसीं
खा गये उनको आसमान-ओ-ज़मीं
हर घड़ी मुन्क़लिब[13] ज़माना है
यही दुनिया का कारख़ाना है
है न शीरीं न कोहकन का पता
न किसी जा है नल दमन का पता

---

1 चंद्रमुखी 2. मकान में रहने वाला 3. कुल दुनिया 4. ठहरा हुआ, स्थित
का एक बादशाह 7. माथा, सर 8. आकाश का भ्रमण 9. हड्डी 10
की उपाधि 11. क़ब्रों के चिह्न 12. कपाल 13. परिवर्तनशील

बू-ए-उल्फ़त तमाम फैली है
बाक़ी अब कैस है न लैली है
सुब्ह को ताइरान-ए-ख़ुश उल्हान[1]
पढ़ते हैं कुल मन-ए-अलैहाफ़ान[2]
मौत से किसको रुस्तगारी[3] है
आज वो, कल हमारी बारी है
ज़िंदगी बेसबात[4] है इसमें
मौत ऐन-ए-हयात है इसमें
हम अगर जान दे दें खाकर सम[5]
तुम न रोना हमारे सर की क़सम
दिल को हमजोलियों में बहलाना
या मेरी क़ब्र पर चले आना
जा के रहना न इस मकान से दूर
हम जो मर जायें तेरी जान से दूर
रूह भटकेगी गर न पायेगी
ढूंढ़ने किस तरफ़ को जायेगी
रोक रहना बहुत तबीयत को
याद रखना मेरी वसीयत को
ज़ब्त करना अगर मलाल रहे
मेरी रुस्वाई का ख़याल रहे
मेरे मरने की जब ख़बर पाना
यूं न दौड़े हुए चले आना
जमा हो लें सब अक़्रबा जिस दम
रखना उस वक़्त तुम वहां पे क़दम
कहे देती हूं जी न खोना तुम
साथ ताबूत के न होना तुम
हो गये तुम अगरचे सौदाई
दूर पहुंचेगी इसकी रुस्वाई
लाख तुम कुछ कहो न मानेंगे

1. मधुर कंठ वाले पक्षी 2. संसार में सब चीज़ें नश्वर हैं 3. निजात 4. कमजोर 5

लोग आशिक़ हमारा जानेंगे
तानाज़न होंगे सब ग़रीब-ओ-अमीर
क़ब्र पर बैठना न होके फ़क़ीर
सामना हो हज़ार आफ़त का
पास रखना हमारी इज़्ज़त का
जब जनाज़ा मिरा अज़ीज़ उठायें
आप बैठे वहां न अश्क बहायें
मेरी मिन्नत पे ध्यान रखिएगा
बंद अपनी ज़बान रखिएगा
तज़्किरा कुछ न कीजिएगा मिरा
नाम मुंह से न लीजिएगा मिरा
अश्क आंखों से मत बहाइएगा
साथ ग़ैरों की तरह जाइएगा
आप कांधा न दीजिएगा मुझे
सब में रुस्वा न कीजिएगा मुझे
रंग दिल के बदल न जायें कहीं
मुंह से नाले निकल न आयें कहीं
होते आतिश[1] के हैं ये परकाले[2]
ताड़ जाते हैं ताड़ने वाले
हो बयां गर किसी जगह मिरा हाल
तुम न करना कुछ उस तरफ़ का ख़्याल
ज़िक्र सुनकर मिरा न रो देना
मेरी इज़्ज़त न यूं डुबो देना
रंज-ए-फ़ुर्क़त मेरा उठा लेना
जी किसी और जा[3] लगा लेना
होगा कुछ मिरी याद से न हुसूल[4]
दिल को कर लेना और से मशग़ूल
रंज करना न मेरा मैं क़ुर्बान
सुन लो गर अपनी जान है तो जहान

---

1. आग 2. अंगारे 3. जगह 4. प्राप्त

दे न उसका खुदा कभी कोइ दर्द
होता नाज़ुक ख़याल है दिल-ए-मर्द
दिल में कुढ़ना न मुझसे छूट के तू
जान देना न घूंट-घूंट के तू
आके रो लेना मेरी क़ब्र के पास
ता निकल तेरी दिल की भड़ास
आंसू चुपके से दो बहा लेना
क़ब्र मेरी गले लगा लेना
अगर आ जाये कुछ तबीयत पर
पढ़ना क़ुर्आन मेरी तुरबत[1] पर
गुंचा-ए-दिल मेरा खिला जाना
फूल तुरबत पे दो चढ़ा जाना
रोके करना न अपना हाल-ए-ज़बूं[2]
ता न हो जाये दुश्मनों को जुनूं
देखिए किस तरह पड़ेगी कल
सख़्त होती है मंज़िल-ए-अव्वल
मेरे मर्क़द[3] पे रोज़ आना तुम
फ़ातिहा से न हाथ उठाना तुम
है ये हासिल सब इतनी बातों से
मिट्टी देना तुम अपने हाथों से
उम्र भर कौन किसको को रोता है
कौन साहब किसी का होता है
कभी आ जाये गर हमारा ध्यान
जानना हम पे हो गई क़ुर्बान
दिल में कुछ आने दीजिओ न मलाल
ख़्वाब देखा था कीजिओ ये ख़्याल
रंज-ओ-राहत जहां में तो अम है
कभी शादी है और कभी ग़म है
है किसी जा पे जश्न-ए-शाम-ओ-पगाह[4]

---

1. क़ब्र 2. बुरा हाल 3. क़ब्र 4. भोर, सुबह

है किसी जा सदा-ए-नाला-ओ-आह
मर्ग का किसको इंतिज़ार नहीं
ज़िदंगी का कुछ ऐतबार नहीं
फिर मुलाक़ात देखें हो कि न हो
आज दिल खोल के गले मिल लो
ख़ूब-सा आज देख भाल लो तुम
दिल की सब हसरतें निकाल लो तुम
आओ अच्छी तरह से कर लो प्यार
कि निकल जाये कुछ तो दिल का बुख़ार
दिल में बाक़ी रहे न कुछ अरमान
ख़ूब मिल लो गले से मैं क़ुर्बान
हश्र तक होगी फिर ये बात कहां
हम कहां तुम कहां ये रात कहां
कह लो सुन लो जो कुछ जी में आये
फिर खुदा जाने क्या नसीब दिखाये
दिल को अपने करो मलूल[1] नहीं
रोने-धोने से कुछ हुसूल[2] नहीं
हमको गाढ़े जो अपने दिल को कुढ़ाये
हमको है-है करे जो अश्क बहाये
उम्र तुमको तो है अभी खेना
दिन बहुत-से पड़े हैं रो लेना
बाहें दोनों गले में डाल लो आज
जो भी अरमान हो निकाल लो आज
फिर ख़ुदा जाने क्या मुसीबत है
इतनी सुहबत बहुत ग़नीमत है
कल किसे बैठकर करोगे प्यार
किसकी लोगे बलाएं तुम हर बार
कल गले से किसे लगाओगे
यूं किसे गोद में बिठाओगे

1. भारी दुःख 2. प्राप्त

हाल किसका सुनायेगी आकर
किसकी मामा बुलायेगी आकर
हम तो उठते हैं इस मकान से कल
अब तो जाते हैं इस जहान से कल
याद इतनी तुम्हें दिलाते जायें
पान कल के लिए लगाते जायें
हो चुका आज जो कि था होना
कल बसायेंगे क़ब्र का कोना
ख़ाक में मिलती है ये सूरत-ए-ऐश
फिर कहां हम, कहां से सूरत-ए-ऐश
ख़त्म होती है ज़िंदगानी आज
ख़ाक में मिलती है जवानी आज
चुप रहो क्यूं अबस में रोते हो
मुफ़्त काहे को जान खोते हो
समझो इस शब को शबबरात की रात
हम हैं मेहमां तुम्हारे रात की रात
चैन दिल को न आयेगा तुझ बिन
अब के बिछुड़े मिलेंगे हश्र के दिन
अब तो इतनी दुआ करो मेरी जान
कल की मुश्किल ख़ुदा करे आसान
फल उठाया न ज़िंदगानी का
न मिला कुछ मज़ा जवानी का
दिल में लेकर तुम्हारी याद चले
बाग़-ए-आलम से नामुराद चले
कहती है बार-बार हिम्मत-ए-इश्क़
है यही मक़्तज़ा-ए-ग़ैरत-ए-इश्क़[1]
चारपाई पे कौन पड़ के मरे
कौन यूं एड़ियां रगड़ के मरे
इश्क़ का नाम क्यूं डुबो जायें

1. इश्क़ की ग़ैरत का तक़ाज़ा

आज ही जान क्यू न खो जाये
जब तलक चर्ख़-ए-बेमदार[1] रहे
ये फ़साना भी यादगार रहे
बोली घबरा के फिर ठहर मेरी जान
कुछ सुना भी कि क्या बजा[2] इस आन
हसरत-ए-दिल निगोड़ी बाक़ी है
और यहां रात थोड़ी बाक़ी है
गोद में अपनी फिर बिठालो जान
फिर गले से हमें लगा लो जान
डाल लो फिर गले में बाहों को
फिर गिलोरी चबा के मुंह में दो
फिर मेरे सर पे रख दो सर अपना
गाल फिर रख दो गाल पर अपना
फिर उसी तरह मुंह को मुंह से मलो
फिर वही बातें प्यार की कर लो
लहर फिर चढ़ रही है कालों की
बू सुंघा दो तुम अपने बालों की
फिर हम उठने लगे बिठा लो तुम
फिर बिगड़ जायें हम मना लो तुम
फिर लबों को चबा के बात करो
फिर ज़रा मुस्कुरा के बात करो
फिर बलाएं तुम्हारी यार लें हम
आओ फिर सर से सर उतार लें हम
रोना इस तरह से तो ज़ार-ओ-क़तार
दुश्मनों को कहीं चढ़े न बुख़ार
आप अच्छे भले बिछुड़ जायें
और लेने के देने पड़ जायें
काट ले कोई धड़ से सर मेरा
बाल बीका न हो मगर तेरा

1. बिना धुरी का आकाश 2. उचित

मैं दिल-ओ-जा से हू फ़िदा तेरी
लेके मर जाऊं मैं बला तेरी
अब तू क्यूं ठंडी सांसे भरता है
क्यूं मेरे दिल के टुकड़े करता है
मैं अभी तो नहीं गई हूं मर
क्यूं सुजाई हैं आंखें रो-रोकर
इस क़दर हो रहा है क्यूं ग़मगीं
क्यूं मिटाता है अपनी जान-ए-हज़ीं[1]
कर न रो-रो के अपना हाल ज़बूँ[2]
अरे ज़ालिम अभी तो जीती हूं
अश्क बहते हैं नागवार तिरे
तू न रो हो गई निसार तिरे
ऐसे क़िस्से हज़ार होते हैं
यूं कहीं मर्दुए भी रोते हैं
यूं तो आंसू न तू बहा अपने
दिल को मज़बूत रख ज़रा अपने
रंज से मेरे कुछ उदास न हो
यूं तो लिल्लाह बदहवास न हो
तुम तो इतने में हो गये रंजूर[3]
थक गये और अभी है मंज़िल दूर
इसी ग़म ने तो मुझको मारा है
सदमा तेरा नहीं गवारा है
अपने मरने का कुछ नहीं है अलम[4]
दिल में मेरे फ़क़त है इसका ग़म
जान हमने तो इस तरह खोई
कौन तेरी करेगा दिल जोई[5]

आके समझाएगा बुझाएगा कौन
इस तरह से गले लगाएगा कौन

1. ग़मगीन 2. बुरा हाल 3. व्याकुल 4. दुःख 5. ढाढस बंधाना

कौन रोकेगा इस तबीयत का
किससे कह जाऊं इस वसीयत को
गो कि बेजा तेरा हिरास[1] नहीं
कोई दिलसोज़ भी तो पास नहीं
मैं कहां हूं जो साथ दूं तेरा
हाथ में किसके हाथ दूं तेरा
यूं तसल्ली तिरी करेगा कौन
मेरी सूरत भला मरेगा कौन
कौन यूं खुश करेगा दिल तेरा
दिल है इस ग़म से मुज़्महिल[2] तेरा
जी लगेगा न साथ में उसका
दिल लिये रहता हाथ में उसका
पर मैं अब इसको क्या करूं कमबख़्त
आसमां दूर है ज़मीं है सख़्त
जो कि उक़्बा[3] में स्याह चली
मगर अपनी सी मैं निबाह चली
जी को तुम पर फ़िदा किया मैंने
हक़ वफ़ा का अदा किया मैंने
बोली फिर ज़ानुओं[4] पे मार के हाथ
नहीं मालूम अब है कितनी रात
जूं-जूं घड़ियाल वां बजाता था
जी मेरा सनसनाया जाता था
यूं तो कोई न दर्द-ओ-ग़म में घिरे
फूल जाते हैं हाथ-पांव मिरे
कुछ अजब हो रहा है जान का तौर
कहती हूं कुछ निकलता है कुछ और
आंसू आंखों में भर-भर आते हैं
दस्त-ओ-पा[5] सारे थरथराते हैं
दिल को समझाती हूं मैं बहुतेरा

1. भय, आशंका 2 शिथिल 3. परलोक 4. घुटनों 5. हाथ-पैर

पर सभलता नहीं है जी मेरा
गो तू बैठा हुआ है पास मेरे
पर ठिकाने नहीं हवास मेरे
होश आते हुए भी जाते हैं
दिल में क्या-क्या ख़याल आते हैं
पेश यूँ फ़ुर्क़त-ए-हबीब[1] न हो
किसी दुश्मन को भी नसीब न हो
दूसरा अब ये और मातम है
स्वांग बाक़ी है शब बहुत कम है
ख़ाक तस्कीन जाने-ज़ार करे
अब वसीयत करें कि प्यार करें
सुनके मैंने दिया ये उसको जवाब
दिल को मेरे बस अब करो न कबाब
तुम तो यूं अपनी जान दो मिरी जान
मैं वसीयत सुनूं खुदा की शान
दिल से रखना ज़रा ये अपने दूर
कौन कमबख़्त ये करेगा उमूर[2]
मुझपे ये दिन तो किबरिया न करे
तुम मरो मैं जिऊं खुदा न करे
जान दे दोगी तुम जो खाकर सम
मैं भी मर जाऊंगा खुदा की क़सम
जो ये देखेगा ख़ूब रोयेगा
आगे-पीछे जनाज़ा होएगा
इक ज़रा मुझसे तो कहो ये हाल
जी में क्या आया आपके ये ख़्याल
दिल ही दिल में अलम उठाती हो
जान देती हो ज़हर खाती हो
पहुंचा मां-बाप से अगर है अलम[3]
इसका करना न चाहिए तुम्हें ग़म

1. प्रेमी से विछोह 2. अनेक काम 3. दुःख

जो कि होते हैं कौल[1] के अशराफ़[2]
यूं तो करते हैं वो कुसूर मुआफ़
कुछ तुम्हीं पर नहीं है ये उफ़्ताद[3]
सब के मां-बाप होते हैं जल्लाद
सदमा हर इक पे ये गुज़रता है
ज़हर खा-खाके कोई मरता है
शिकवा मां-बाप का तो नाहक़ है
उनका औलाद पर बड़ा हक़ है
हों जो नाराज़ ये क़यामत है
उनके क़दमों के नीचे जन्नत है
तुम तो नाम-ए-खुदा से हो दाना[4]
इस पे रुत्बा न उनका पहचाना
क्या भरोसा हयात का उनकी
न बुरा मानो बात का उनकी
होश रहते नहीं हैं इस सिन[5] के
ये तो मेहमान हैं कोई दिन के
इतनी-सी बात का ग़ुबार है क्या
उनके कहने का एतबार है क्या
ग़ौर से कीजिए जो दिल पे ख़याल
उनका गुस्सा नहीं है जा-ए-मलाल[6]
सुन के उसने दिया ये मुझको जवाब
हमने देखी नहीं है चश्म-ए-अताब[7]
बेहया ऐसी ज़िंदगी को सलाम
मुंह पे आये न थे कभी ये कलाम
ताने सुनती हूं दो महीने से
मौत बेहतर है ऐसे जीने से
ख़ून-ए-दिल कब तलक पिये कोई
बेहया बन के क्या जिये कोई

1. कथन, बात 2. शरीफ़, निष्ठावान 3. विपत्ति 4. बुद्धिमान 5. उम्र (
7. उग्र कोपपूर्ण दृष्टि

नोज इनसान बहमय्यत[1] हो
आदमी क्या न जिसको ग़ैरत हो
बात वो किस तरह बशर[2] से उठे
न सुनी हो कभी जो कानों से
वो सुने जिसको इसकी आदत है
इसमें क्या अपनी-अपनी ग़ैरत है
पर मिरे जीते जी तू बहर-ए-ख़ुदा
अपने मरने का जिक्र मुंह पे नला
कौन सा पड़ गया है रंज-ओ-मिहन[3]
जान क्यूं देंगे आपके दुश्मन
तुमने जी देने की जो की तदबीर
हश्र के रोज़ हूंगी दामनगीर[4]
तू सलामत जहां में रह मेरी जान
निकलें मां-बाप के तेरे अरमान
वास्ते मेरे अपना दिल न कुढ़ा
चांद-सी बन्नो घर में ब्याह के ला
है यही लुत्फ़ ज़िंदगानी का
देख सुख अपनी नौजवानी का
चार दिन है ये नालाओ-फरियाद
उम्र भर कौन किसको करता है याद
लुत्फ़ दुनिया के जब उठाओगे
हमको दो दिन में भूल जाओगे
था यही ज़िक्र जो बजा घड़ियाल
सुनते ही उसको हो गई बेहाल
हो गया फ़र्त-ए-ग़म[5] से चेहरा ज़र्द
दस्त-ओ-पा थरथरा के हो गये सर्द
मुर्दनी रुख़ पे छा गई उसके
दिल में गुज़रा जो उसके सुब्ह का शक
हुई अस्तादा[6] जाके ज़ेरे-फलक

---

ा 3 तकलीफ़ 4. भेंट करना 5. दुःख की अधिकता 6. खड़ी हुई

ठंडी जिस दम चली नसीम-ए-सहर[1]
हो गया हाल और भी अब्तर[2]
इतने में सुब्ह की बजी दर्दी[3]
दूनी चेहरे की हो गई ज़र्दी
हुए साबित जो सुबह के आसार
हो गई और उसकी हालत ज़ार
बेद की तरह जिस्म थर्राया
सर से ले पांव तक अरक़[4] आया
बातें करती जो भी सो भूल गई
दम लगा चढ़ने सांस फूल गई
बोली घबरा के रहियो इसके गवाह
और कहा ला इलाहा इल्लल्लाह
अब फ़क़त ये है ख़ूंबहा[5] मेरा
बख़्श दीजो कहा-सुना मेरा
कह के वो फिर चिमट गई इक बार
और किया ख़ूब भींच-भींच के प्यार
सर से लेकर बलाएं ताबा क़दम[6]
बोली तुम पर निसार होते हैं हम
आग लग जाये वो घड़ी कमबख़्त
बाम[7] पर आई थी मैं कौन से वक़्त
फिर वो बोली ये पोंछ कर आंसू
मेरे सर की क़सम न कुढ़ियो तू
आज़माती थी तुझको कसती थी
मैं तेरे छेड़ने को हंसती थी
कह के ये बात हो गई वो सवार
याँ बंधा आंसुओं से आंख का तार
आतिश-ए-ग़म भड़क गई दूनी
तपिश-ए-क़ल्ब[8] ने की अफ़ज़ूनी[9]

---

1. सुबह की हवा 2. दुर्दशा 3. नीचे बची हुई शराब तलछट 4. प
6. पांव तक 7. घर का बाहरी भाग 8. मन का ताप 9. ज़्या

याद आती थी जब वसीयत-ए-यार
वहम लाता था दिल हज़ार हज़ार
थी मुसीबत जो ये बला अंगेज़
ध्यान आते थे क्या-क्या वहशतखेज़[1]
दिल में कहने का उसके था जो मलाल
आते थे ज़ेहन में अजीब ख़याल
कौन रोकेगा जाके घर बैठे
जो कहा था वही न कर बैठे
हर घड़ी था जो इज़्तिराब-ए-फ़ुज़ूँ[2]
चिपका रोता था बैठा मैं महज़ूं[3]
कि उठा एक सिम्त से शोर-ओर-गुल
होश जिससे कि उड़ गये बिल्कुल
शो'ला इक आग का भड़कने लगा
मिस्ल बिस्मिल[4] के दिल तड़पने लगा
यूं तो गुज़रे थे दो पहर रोते
और हाथों के उड़ गये तोते
हो गया दिल को इस तरह का हिरास
आये सौ सौ तरीक़ के वस्वास[5]
कहा इक दोस्त से कि तुम जाकर
जल्द इस शोर-ओ-गुल की लाओ ख़बर
रोते हैं हम-से बदनसीब कोई
मर गया उनका क्या हबीब[6] कोई
यूं जो अपनी ये जान खोते हैं
कौन हैं किसलिए ये रोते हैं
क्या हुआ इन पे सदमा-ए-जाँकाह[7]
ये जो करते हैं ऐसे नाला-ओ-आह
दौड़े आख़िर उधर मिरे अहबाब
ले के आये ख़बर वहाँ से शिताब[8]

---

1. भीषण, भयानक 2. बढ़ती हुई बेचैनी 3. ग़मगीन 4. घायल की भाति 5. वहम 6 7. प्राण हरने वाला आघात 8. शीघ्र

किया इस तरह आके मुझसे बया
कि यहाँ से है एक क़रीब मकाँ
बाग़ के पास जो बना है घर
वाँ फ़िरोकश[1] है एक सौदागर
यूं तो एक शोर राह भर में है
पर ये आफ़त उन्हीं के घर में है
साफ़ खुलता नहीं है ये असरार[2]
मर गया कोई या कि है बीमार
पर ये होता है अक़्ल से इदराक[3]
कि नहीं बेसबब उड़ाते ख़ाक
कुछ न कुछ है तो ऐसी ही रूदाद[4]
कि है ये शोर-ए-नाला-ओ-फ़रियाद
नहीं बरपा ये बेसबस मातम
है निकलता किसी जवान का दम
हर बशर हो रहा है दीवाना
कोई मरता है साहिब-ए-ख़ाना
नहीं क़ाबू में है किसी का दिल
पीटते सर हैं साहिबान-ए-महल
नहीं देता सुनाई कुछ बिल्कुल
है फ़क़त एक हाय-हाय का गुल
थमता इक दम भी वाँ ख़रोश नही
किससे पूछें किसी को होश नहीं
रोते जिस दर्द से हैं वो इस दम
देखा जाता नहीं ख़ुदा की क़सम
कह गई थी जो वो कि खाऊंगी जहर
मैं ये समझा कि हो गया वही कहर
गो हया से न उसका नाम लिया
दोनों हाथों से दिल को थाम लिया
दोस्तों ने जो देखी ये सूरत

1. ठहरा हुआ 2. रहस्य, मर्म 3. समझ-बूझ 4. व्यथा-कथा

बोले इस तरह अज़-रह-ए-उल्फ़त
हाल-ए-दिल यूं तुम्हारा ग़ैर जो है
मगर इस वक़्त क्या है ख़ैर तो है
बेसबब किस लिए हुए हो उदास
उड़ गये क्यूं तुम्हारे होश-ओ-हवास
कौन सी आफ़त आ गई इस दम
मुर्दनी मुंह पे छा गई इस दम
क्या है जो इतना बेक़रार हो अब
कोई मर जाये तुमसे क्या मतलब
ऐसी हालत जो पेच-ओ-ताब[1] की है
तुमको क्या वजह इज़्तिराब[2] की है
शहर में लोग रोज़ मरते हैं
ख़फ़्क़ाँ[3] इसका न कोई करते हैं
फ़िक्र करता है इस तरह की ज़बूँ[4]
यूं ही हो जाता है बशर को जुनूँ
सुन के माँ-बाप क्या कहेंगे बताओ
होश पकड़ो ज़रा हवास में आओ
तुमको क्या है जो जान खोते हो
बेसबब अप ही आप रोते हो
हो रहे हो मलूल[5] किस ग़म से
हाल दिल का कहो तो कुछ हमसे
ताना आमेज़[6] दोस्तों के बयाँ
हुए मालूम नश्तर-ए-रग-ए-जाँ
न दिया उनको ग़म के मारे जवाब
ढाँप कर मुँह किया बहाना-ए-ख़्वाब
उठ गये दोस्त आशना जिस दम
खोल कर मुँह को चुपके उट्ठे हम
हाल-ए-दिल सीने में हुआ जो तबाह
बैठा कमरे में आन कर सर-ए-राह

1. छटपटाहट 2. बेचैनी 3. भय, चिंता 4. बुरी 5. विक्षुब्ध 6. उलाहना देने वाले

देखा बरपा है एक हश्र का गुल
भीड़ से बंद राह है बिल्कुल
उस तरफ़ से जो लोग आते हैं
यही आपस में कहते जाते हैं
हाल उनका भी जा-ए-रिक़्क़त[1] है
दाग़ औलाद का क़यामत है
नोच डाले हैं सारे सर के बाल
क्या परीशाँ हैं वालिदैन[2] का हाल
आफ़त-ए-ताज़ा सर पे ये आई
बिक रहे हैं मिसाल-ए-सौदाई
ध्यान उनकी तरफ़ जो जाता है
ग़म से मुंह को कलेजा आता है
जो कि थे उनमें साहिब-ए-औलाद
हाल अब्तर था उनका हद से ज़्याद
कहते थे पीट कर सर-ओ-सीना
क्यूं न दुश्वार उनको हो जीना
मर्ग-ए-औलाद[3] का वो मातम है
रंज-ओ-ग़म जिस क़दर करें कम है
कोई कहता ये कैसी आफ़त है
नौजवाँ मरना भी क़यामत है
यूं तो है अज़-पए-ज़माना मर्ग[4]
न मरे पर कोई जवानामर्ग[5]
कोई बोला कि है सभी को मलाल
देखा जाता नहीं ये बाप का हाल
आतिश-ए-ग़म से दिल हुआ है कबाब
है तपाँ[6] मिस्ल माही-ए-बेआब[7]
चश्मा[8] जारी है चश्म-ए-गिरियाँ[9] का
होश बाक़ी नहीं, तन-ओ-जाँ का

---

1. रोने की जगह 2. मां-बाप 3. संतान की मृत्यु 4. पूरे ज़माने को मौत 6. छटपटाता हुआ 7. जल बिन मछली 8. झरना 9. शोक

नहीं दम भर किसी को वाँ आराम
देखने वाले रो रहे हैं तमाम
फोड़ डाले हैं सबने सर अपने
सर-ओ-पा[1] की नहीं ख़बर अपने
बनिए-बक़्क़ाल जान खोते हैं
सारे दूकानदार रोते हैं
हाल देखा जो मैंने ये उठकर
हिल गया सीने में दिल-ए-मुज़्तर[2]
न रही ताब रंज के मारे
लगे थर्राने दस्त-ओ-पा[3] सारे
बहर-ए-उल्फ़त[4] ने दिल में मारा जोश
गिर पड़ा होके ख़ाक पर बेहोश
इश्क़ की थी जो दिल को बीमारी
ग़श का आलम-सा हो गया तारी
दो घड़ी बाद फिर जो आया होश
देखा बरपा अजब है जोश-ओ-ख़रोश
आगे-आगे है कुछ जुलूस रवाँ
सर खुले पीछे कुछ हैं पीर-आ-जवाँ[5]
सनरसीदा[6] हैं औरतें कुछ साथ
सीना-ओ-सर पे मारती हैं हाथ
कोई मामा है कोई दादी है
कोई अन्ना कोई खिलाई है
जब वो भरती है ग़म से आहें सर्द
सुनने वालों के दिल में होता है दर्द
होता ग़ैरों को है मलाल उनका
देखा जाता नहीं है हाल उनका
कुछ बयाँ ऐसे होते जाते हैं
रास्ते वाले रोते जाते हैं

---

1. सर और पैर 2. व्याकुल 3. हाथ और पैर 4. प्रेम रूपी समुद्र 5. बूढ़े और जवान
6. वयोवृद्ध

इसके पीछे पड़ी फिर उस पे निगाह
कि न देखे बशर मआज़ल्लाह[1]
शामियाना नया ज़री का है
नीचे ताबूत उस परी का है
सेहरा उस पर बंधा है इक ज़रतार
जैसे गुलशन की आख़िरी हो बहार
थी पड़ी उस पर एक चादर-ए-गुल
जिससे ख़ुशबू निकलती थी बिल्कुल
ऊद सोज़ आगे-आगे रौशन थे
मर गये पर भी लाख जोबन थे
भीड़ ताबूत के थी ऐसी साथ
जैसे आये किसी दुल्हन की बरात
सब वज़ी-ओ-शरीफ़[2] थे हमराह
भीड़ थी इस क़दर कि तंग थी राह
साथ थे ख़्वेश-ओ-अक़्रबा[3] सारे
ता किसी जा पे सर न दे मारे
हाल इस दर्जा हो रहा था ज़बूँ
बहता जाता था सर के ज़ख़्म से ख़ूँ
सब अमीर-ओ-फ़क़ीर रोते थे
देखकर राहगीर रोते थे
पीछे सबके फ़िनस में थी मादर
कहती जाती थी इस तरह रोकर
तेरी मय्यत पे हो गई मैं निसार
कमसुख़न[4] हाय मेरी ग़ैरतदार
दिल पे जो गुज़री कुछ बयान न की
कुछ वसीयत भी मेरी जान न की
कुछ नहीं मां की अब ख़बर तुमको
किसकी ये खा गई नज़र तुमको

---

1. अल्लाह बचाए 2. संभ्रांत और सज्जन 3. सगे-संबंधी 4. मितभाषी

दिल ज़ईफी[1] में मेरा तोड़ गई
बिटिया इस माँ को किस पे छोड़ गई
ताज़ा पैदा जिगर पे दाग़ हुआ
घर मेरा आज बेचिराग़ हुआ
दिल को हाथों से कोई मलता है
जी संभाले नहीं संभलता है
ज़हर दे दे कोई मैं खा जाऊँ
या ज़मीं शिक़[2] हो मैं समा जाऊँ
दाग़ तेरा जिगर जलाता है
चांद-सा मुखड़ा याद आता है
मिट गया लुत्फ़ ज़िंदगानी का
दिल को ग़म है तेरी जवानी का
ब्याह तेरा रचाने पाई न मैं
कोई मिन्नत बढ़ाने पाई न मैं
तेरी सूरत के हो गई क़ुर्बान
चलीं दुनिया से कैसी पुरअरमान[3]
हुईं किस बात पर ख़फ़ा बोलो
अम्मा दारी ज़रा जवाब तो दो
बोलतीं तुम नहीं पुकारे से
अब जिऊंगी मैं किस सहारे से
क्या कज़ा ने जिगर पे दाग़ दिया
आज घर मेरा बे चराग़ किया
निकला मां-बाप न कुछ अरमान
हाय बेटी न तुम चढ़ीं परवान
ऐसी इस मां से हो गई बेज़ार
ली न ख़िदमत भी पड़ के कुछ बीमार
न जिऊंगी तिरे फ़िराक़ में मैं
दिल तड़पता है आंखें ढूंढती हैं
किस मुसीबत में पड़ गई बेटा

टुकड़ा-टुकड़ा 3. अभिलाषाओं से भरी हुई

कोख मेरी उजड़ गइ बेटा
उम्र कटती थी ऐसे सदमे में
ठोकरें थीं वहीं बुढ़ापे में
सुनके इस तरह उसकी मां के बैन
और सीने में दिल हुआ बेचैन
थी वसीयत जो उस परी की याद
सबके पीछे मैं हो लिया नाशाद
गो ये ताक़त न थी कि चलता राह
ले चला जज़्ब-ए-इश्क़ पर हमराह
पीछे इन सब के जो रवाँ था मैं
सूरत-ए-गर्द-ए-कारवाँ[1] था मैं
गो तड़पता था सूरत-ए-बिस्मिल[2]
बैठ जाता था गाह[3] थाम के दिल
जूं-जूं करता था ज़ब्त का नाला
हुआ जाता था दिल तह-ओ-बाला[4]
मुर्ग़-ए-बिस्मिल[5] की मेरी सूरत थी
याँ गिरा वाँ गिरा ये हालत थी
अल ग़रज़ पहुंचा साथ उनके वहाँ
दफ़्न का उसके था मुक़ाम जहाँ
क़ब्र खुदती जो वाँ नज़र आई
लाख रोका पे चश्म भर आई
देख कर ये जो लोग रोने लगे
टुकड़े-टुकड़े जिगर के होने लगे
ताक़त-ए-ज़ब्त-ए-गिर्या[6] जब न रही
दिल से अपने ये मैंने बात कही
कह के क्या मर गई ये जान तुझे
कुछ वसीयत का भी है ध्यान तुझे
हो न लिल्लाह बेक़रार इतना

---

1. कारवां की धूल की तरह 2. घायल की तरह 3. कमी 4. ऊप
5. घायल पक्षी 6. वेदना को सहन करने की शक्ति

ज़ब्त कर नाला[1] हो सके जितना
दिल को समझा के ये गया मैं वहां
जमा सब उसके अक़्बा[2] थे जहां
दिल-ए-आफ़तज़दा को बहलाकर
चिपका बैठा मैं उस तरफ़ जाकर
अश्क आंखों से गो न बहते थे
लोग पर देख कर ये कहते थे
हाल चेहरे का आज कैसा है
ख़ैर तो है मिज़ाज कैसा है
लाल आंखें हैं तमतमाये हैं गाल
वजह क्या है बयान कीजिए हाल
मुंह पे इक मुर्दनी सी छाई है
चेहरे पे छुट रही हवाई है
बोला मैं और कुछ नहीं है बात
शब को सोया नहीं मैं सारी रात
इस पे पैदल जो आया मैं मजबूर
रंग चेहरे का हो गया काफ़ूर
तर्क-ए-आदत[3] भी इक अदावत है
रात का जागना क़यामत है
दिल का शक उनके सब निकाल दिया
यही कह सुनके उनको टाल दिया
गुल[4] हुआ इतने में सब आते जायें
फ़ातिहा पढ़ते जायें जाते जायें
सुनके ये सब वहां गये अहबाब[5]
बख़्शा पढ़-पढ़ के फ़ातिहा का सवाब
जब कि इससे भी हो गई फ़ुर्सत
आये जितने ये हो गये रुख़्सत
पाई तनहा जो मैंने यार की क़ब्र
दिल को बाकी रही न ताक़त-ए-सब्र

1. रुदन-क्रंदन 2. आत्मीय जन 3. आदत का छोड़ना 4. शोर 5. स्वजन, संबंधी

था जो उस शम्मा रू[1] का दीवाना
दौड़ कर आया मिस्ल-ए-परवाना
गिर पड़ा आके क़ब्र पर इक बार
और रोने लगा मैं ज़ार-ओ-क़तार
न रहा था जो इख़्तियार में दिल
लौटा तुर्बत[2] पे सूरत-ए-बिस्मिल[3]
मर गई थी जो मुझपे वो गुल्फ़ाम
ज़िंदगी हो गई मुझे भी हराम
देखा आंखों से था जो ऐसा क़हर
खा गया मैं भी घर में आके ज़हर
दो पहर तक तो क़ै रही जारी
बाद इसके ग़शी[4] हुई तारी
तीन दिन तक रही वो बेहोशी
हो गई जिससे ख़ुद फ़रामोशी[5]
ऐन ग़फ़लत में फिर ये देखा ख़्वाब
कि ये कहती है वो बाचश्म-ए-अताब[6]
सुन तो रे तूने ज़हर क्यूं खाया
कुछ वसीयत का भी न पास[7] आया
हुए ख़ुद रफ़्ता[8] ऐसे हद से ज़्याद
दो ही दिन में भुला दी मेरी याद
दिल से मेरा भुला दिया कहना
कह के ये जब वो हो गई रूपोश
खुल गई आंख आ गया मुझे होश
ज़हर का फिर न कुछ असर पाया
एक तअज्जुब सा मुझको ये आया
आशना[9] दोस्त सबका था ये बयान
मुर्दे भी जी उठे ख़ुदा की शान
हो गया वालिदैन[10] को ये सुरूर

---

1. दीपक की भांति प्रकाशवान चेहरे वाली 2. क़ब्र 3. घायल की
5. आत्मविस्मरण 6. कोप दृष्टि के साथ 7. भरोसा 8. खोया हुआ 9